कहि कबीर मोहि बिआहि चले है।

विवाह करवाने से पहले, इन बातों पर विचार करें!

ठाकुर दलीप सिंघ

कहि कबीर मोहि बिआहि चले है।

ठाकुर दलीप सिंघ जी द्वारा लिखित

सुखी जीवन जीने के लिए सर्वोत्तम पुस्तक।

यह पुस्तक विवाह संबंधी आप की सोच बदल कर,

आप के जीवन को अत्यंत सुखमय बना देगी।

सरल शब्दों में, दुर्लभ जानकारी से भरपूर ऐसी

शिक्षा; आप को और कहीं नहीं मिलेगी।

यह पुस्तक आप का जीवन बदल देगी।

...स्वर्णजीत स्वी

(महान कवि एवं महान चित्रकार)

ੴ

श्री सतिगुरू राम सिंघ जी सहाए ॥

लेखक: ठाकुर दलीप सिंघ

Copyright © 2024 by Thakur Dalip Singh

Email: info@namdhari-sikhs.com
Website: www.namdhari-sikhs.com
Contact: +91 9650066108, +91 9023150008

युवा पीढ़ी वालो!
विवाह करवाने से पहले, इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। अपने माता-पिता को भी पढ़ाएं। जिन के विवाह हो गए हैं, वह भी इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें; उन्हें भी लाभ मिलेगा। यह पुस्तक आप की सोच को बदल कर, आप का जीवन सुखी बना देगी।

विषय सूची

1. प्रस्तावना 7
2. असली दंपत्ति कैसी होती है? 11
3. विवाह संबंधी विचार करना क्यों आवश्यक है? 15
4. प्रेम तथा विवाह में अंतर 17
5. विवाह क्यों करवाना है? 21
6. विवाह का अर्थ क्या है? 26
7. विवाह करवाने से पहले, सुखी जीवन जीने की कला सीखें। 31
8. रोने दो, मन हल्का होने दो। 38
9. विवाह एक समझौता है। 41
10. विवाह संबंधी खर्चों पर पहले विचार करें। 43
11. प्रेम विवाह 51
12. विवाह से पहले स्वभाव को जानें। 55
13. विवाह से पहले कुंवारे रहें। 56
14. लड़के के कुछ आवश्यक कर्तव्य। 59

15.	परिवारिक षड्यंत्रों से सावधान कैसे रहें?	64
16.	दामाद के कर्त्तव्य	68
17.	विवाह से पहले लेने वाले निर्णय।	69
18.	धोखे समय कैसे संभलना है?	71
19.	अत्यंत विशेष	74
20.	सहमत होने की कला सीखें।	77
21.	बच्चे पैदा करने से पहले विचार करें।	79
22.	बच्चे के जन्म उपरांत।	82
23.	तलाक तक स्थिति पहुँचने का कारण क्या है?	93
24.	तलाक की कार्यवाही शुरू करने से पहले विचार करें।	95
25.	पुस्तक का सार।	102

प्रस्तावना

स्त्री-पुरुष का एक-दूसरे प्रति आकर्षण, प्रकृति ने ही बनाया है। उसी आकर्षण को आधार बना कर, प्रत्येक मनुष्य को सुखी रखने हेतु; प्राचीन काल में महान विद्वानों ने स्त्री-पुरुष को इकट्ठे किया। उन दोनों के जीवन को सुखद रूप से चलाने लिए; विवाह की रस्म और विवाह का पवित्र बंधन भी स्थापित किया गया।

विवाह शादी की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। भारत में इसे पवित्र बंधन माना जाता है। यह बंधन, स्त्री-पुरुष को जोड़ कर, उन्हें जीवन साथी बना कर, एक परिवार का रूप देता है। फिर कई परिवारों को मिला कर समाज बनता है, एवं समाज बन कर ही मनुष्य का जीवन सुखी चल सकता है। समाज में रह कर ही, मेल-मिलाप के माध्यम से मनुष्य ने अब तक प्रगति की है तथा आगे भी कर सकता है। परिवारों के टूटने से समाज बिखरता है

एवं समाज-विरोधी तत्व उत्पन्न हो जाते हैं।

विवाह की इस पवित्र रस्म तथा बंधन में पति-पत्नी दोनों को सुख मिलना चाहिए। परंतु, विवाह की सच्चाई से अज्ञात होने के कारण, अज्ञानता वश; उस पवित्र बंधन में बंधे अधिकतम पति-पत्नी, अपने वैवाहिक जीवन में सुख की बजाय, दुख ही भोगते हैं। क्योंकि, वह आपस में हमेशा लड़ते-झगड़ते ही रहते हैं। उन झगड़ों के कारण, उस दंपति का जीवन अत्यंत दुखमय हो जाता है। जिस के चलते कई बार कोई आत्मघात भी कर लेता है, नहीं तो रोते-रोते ही जीवन व्यतीत करता है।

सामाजिक दबाव एवं परंपराओं के कारण, बहुत सारे पति-पत्नी; चाह कर भी अलग नहीं हो सकते। इस तरह वह एक दुख भरा, अनचाहा जीवन जीने के लिए बाध्य हो जाते हैं।

पति-पत्नी की दंपत्ति से बना परिवार; समाज का एक स्तंभ है। इस स्तंभ के बिना, समाज का स्थिर रहना असंभव है। जब दंपत्ति टूटती है, तो परिवार टूटता है;

जब परिवार टूटता है, तो समाज भी टूटता है। टूटते परिवारों को देख कर, तलाक के कारण समाज की संपूर्ण संरचना को लड़खड़ाते देख, मेरे मन में इस के कारणों एवं समाधान को जानने की इच्छा उत्पन्न हुई। जिस कारण यह लेख लिखना आरंभ हुआ, जो धीरे-धीरे पुस्तक का रूप ले गया। मैंने जो कारण खोजे तथा जो समाधान मिले, वह यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।

अनगिनत ऐसे दुखी दंपतियों की स्थिति को देख कर, मैंने इस समस्या का गहराई से विश्लेषण किया, इस संकट के मूल कारणों की खोज की तथा उस का समाधान निकाला। यह पुस्तक उन्हीं उपायों की चर्चा करती है, जो वैवाहिक जीवन को दुखी होने से पहले ही, सुखमय बनाने में सहायक हो सकते हैं। ता कि, हर मनुष्य अपने वैवाहिक जीवन में आनंद एवं संतुष्टि प्राप्त कर सके।

जीवन को सुखमय बनाने के वह उपाय: सरल शब्दों में, इस पुस्तक के माध्यम से पाठकों को प्रस्तुत कर

रहा हूं। यदि आप को इस में से कुछ अच्छा लगे या लाभकारी लगे, तो कृपया ईमेल के माध्यम से लिख कर, अपने विचार अवश्य भेजें या दिए गए फोन नंबरों पर संपर्क करें।

ठाकुर दलीप सिंघ

ੴ सतिगुरु प्रसादि ॥

कहि कबीर मोहि बिआहि चले है।

विवाह का अर्थ क्या है?
असली दंपत्ति (शादीशुदा जोड़ा) कैसी होती है?

सतिगुरु अमरदास जी अनुसार: असली दंपत्ति वह होते हैं, जो अपने स्वभाव को पूरी तरह से आपस में मिला कर, जीवन भर सुखी रहें। "**धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥ एक जोति दुइ मूरती; धन पिरु कहीऐ सोइ**" (पन्ना 788)। अर्थ: केवल स्त्री, पुरुष के साथ रहने या बैठने से ही, वह

असली पति-पत्नी नहीं बन सकते। असली पति-पत्नी वह होते हैं, जिन के शरीर तो भले ही दो हों, परंतु अंदर से वह दोनों एक ज्योति हों। युवा पीढ़ी वालो! यदि आप ने विवाह करवाना ही है; तो ऐसे दंपत्ति बनें, जैसे गुरु जी ने उपरोक्त पंक्ति में लिखा है। विचारवान बन कर, लंबा अभ्यास कर के; एक सीमा तक ऐसे दंपत्ति बना जा सकता है।

पति-पत्नी के संबंध को भारतीय संस्कृति में 'अर्धांगिनी' एवं 'धर्मपत्नी' जैसे श्रेष्ठ शब्दों में परिभाषित किया गया है, जो दोनों के लिए सम्मान, स्नेह और कर्त्तव्य पालन को दर्शाते हैं। भारतीय संस्कृति में इस संबंध को तोड़ने का कोई प्रावधान ही नहीं है।

युवा पीढ़ी वालो! विवाह करवाने से पहले इस पुस्तक को कई बार पढ़ें एवं इस में लिखे पर विचार करें। आत्मविश्लेषण करें, पुनः इस पुस्तक को कई बार पढ़ कर, फिर विचार करें। विवाह करवाने वाले युवक-युवती: पहले इस पुस्तक को अकेले पढ़ कर, फिर दोनों फोन पर या साथ बैठ कर भी इसे पढ़ें। इस तरह, एक-दूसरे से प्रश्न पूछ कर, आप उत्तर भी जान सकें गे। उस के उपरांत, फिर भी यदि आप का मन माने, तो ही विवाह करवाएं।

विवाह बहुत अच्छी प्रथा है, परंतु, यह एक बंधन भी है। इस लिए, सोच-समझ कर विवाह के बंधन में बंधें। यह बात दृढ़ करें: यदि विवाह करवा लिया, तो तलाक नहीं देना; खुशी-खुशी जीवन व्यतीत करना है। यदि आप का दांपत्य जीवन, बिना झगड़े के, सुख-पूर्वक व्यतीत होगा, तो आप बाकी समाज से अलग दिखें गे। इस प्रकार, आप गुरुवाणी की इस पंक्ति को सार्थक करें गे: "**सो जनु रलाइआ ना रलै**

जिसु अंतरि बिबेक बीचारु (पन्ना 28)। विवेक या बिबेक का अर्थ है: विचार-सहित किसी वस्तु या बात का सही स्वरूप निश्चय करना; विचार-सहित तर्कशील निर्णय लेने की क्रिया; निर्णय शक्ति एवं बुद्धि। विवेक बुद्धि का अर्थ है: विचार करने वाली तर्कशील बुद्धि। अविवेक का अर्थ है: विचार-रहित बुद्धि एवं तर्क-रहित निर्णय शक्ति।

विवाह संबंधी विचार करना क्यों आवश्यक है?

अविवेक राजा
और उस की दुखी प्रजा

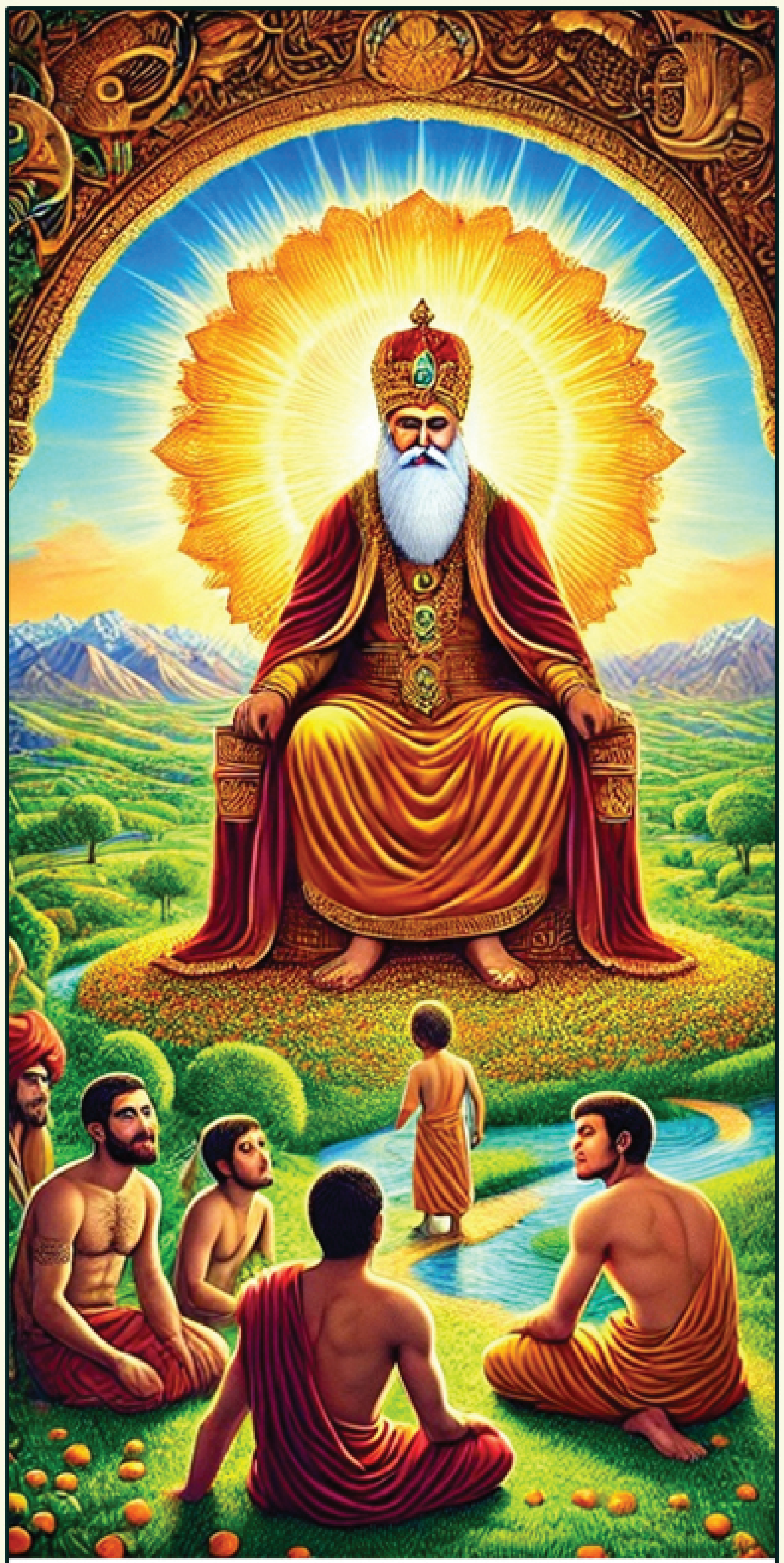

विवेक राजा
और उस की सुखी प्रजा

सतिगुरु गोबिंद सिंघ जी ने लिखा है कि विश्व में केवल दो ही राजा हैं। जिन के नाम हैं: विवेक और अविवेक; जो संपूर्ण संसार में हर मनुष्य के मन पर शासन करते हैं "**इक बिबेक, अबिबेक: जगत द्वै नृपत**

सुलच्छन" (पातशाही १०)। इन दोनों में से आप जिस राजा की प्रजा बन कर, अपने मन पर उस को शासन करने देंगे; उसी राजा के अनुसार आप का जीवन सुखी या दुखी हो जाएगा। क्योंकि, केवल यह दोनों राजे ही हर मनुष्य के मन के स्वामी हैं।

विवाह संबंध: आपसी भरोसे, साथ एवं सांझे अनुभवों पर टिका होता है। विवाह: विश्वास पर आधारित एक ऐसा संबंध है, जिस का उद्देश्य: खुशी तथा एक-दूसरे के प्रति सम्मान है। एक दूसरे से विवाद या झगड़ा नहीं। यदि ऐसी श्रेष्ट, आवश्यक भावनाएं पति-पत्नी के संबंधों से लंबे समय तक उड़ जाएं, तो विवाह; केवल दिखावे मात्र का संबंध रह जाता है, या केवल कागजों में सिमट जाता है। असली विवाह तो समाप्त हो जाता है। विवाह एक ऐसा संबंध है, जिसे सद-बुद्दि का प्रयोग कर के, विचारवान बन कर; लंबे समय तक निभाना होता है। इस लंबे संबंध में, कोई भी तीव्र भावना बहुत ज्यादा काम नहीं कर सकती। क्योंकि तीव्र भावना में, विचार नहीं रह जाती।

प्रेम तथा विवाह में अंतर

विवाह: स्त्री-पुरुष का प्रेम नहीं। क्योंकि, विवाह एक लंबे समय तक निभाने वाला संबंध होता है, जो जीवन भर चलना होता है। और, प्रेम: बहुत लंबे समय तक निभने वाला संबंध नहीं होता। विवाह के उपरांत साथ रहते हुए, एक दूसरे से मोह हो जाता है। परंतु, प्रेम वाली तीव्र भावना नहीं रह जाती। कोई भी तीव्र भावना लंबे समय तक रह ही नहीं सकती। इस कारण, विवाह तो विचार एवं विवेक आधारित संबंध है। जब कि प्रेम: भावना आधारित संबंध है। प्रेम में, विचार एवं विवेक नहीं होता। जिस संबंधी सतिगुरु गोबिंद सिंघ जी ने लिखा है: "**सुभ चार भई तो बिचार कहां है**"। जब

चार आंखें मिल कर प्रेम होता है; तब विचार, विवेक नहीं रह जाते। गुरु ग्रंथ साहिब में लिखा है "**इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि**" (पन्ना 658)। प्रेम समय विवेक बुद्धि बल-रहित हो जाती है। केवल, प्रचंड भावना ही प्रबल होती है। प्रेम एक तीव्र भावना होती है तथा किसी भी तीव्र भावना में; विचार/विवेक बुद्धि कार्य ही नहीं करती।

इस लिए, प्रेम: विवाह नहीं, एवं विवाह: प्रेम भी नहीं। सुखी जीवन जीने के लिए: प्रेम तथा विवाह को भिन्न-भिन्न कर के देखें एवं समझें। चाहे "प्रेम विवाह" ही करवाएं।

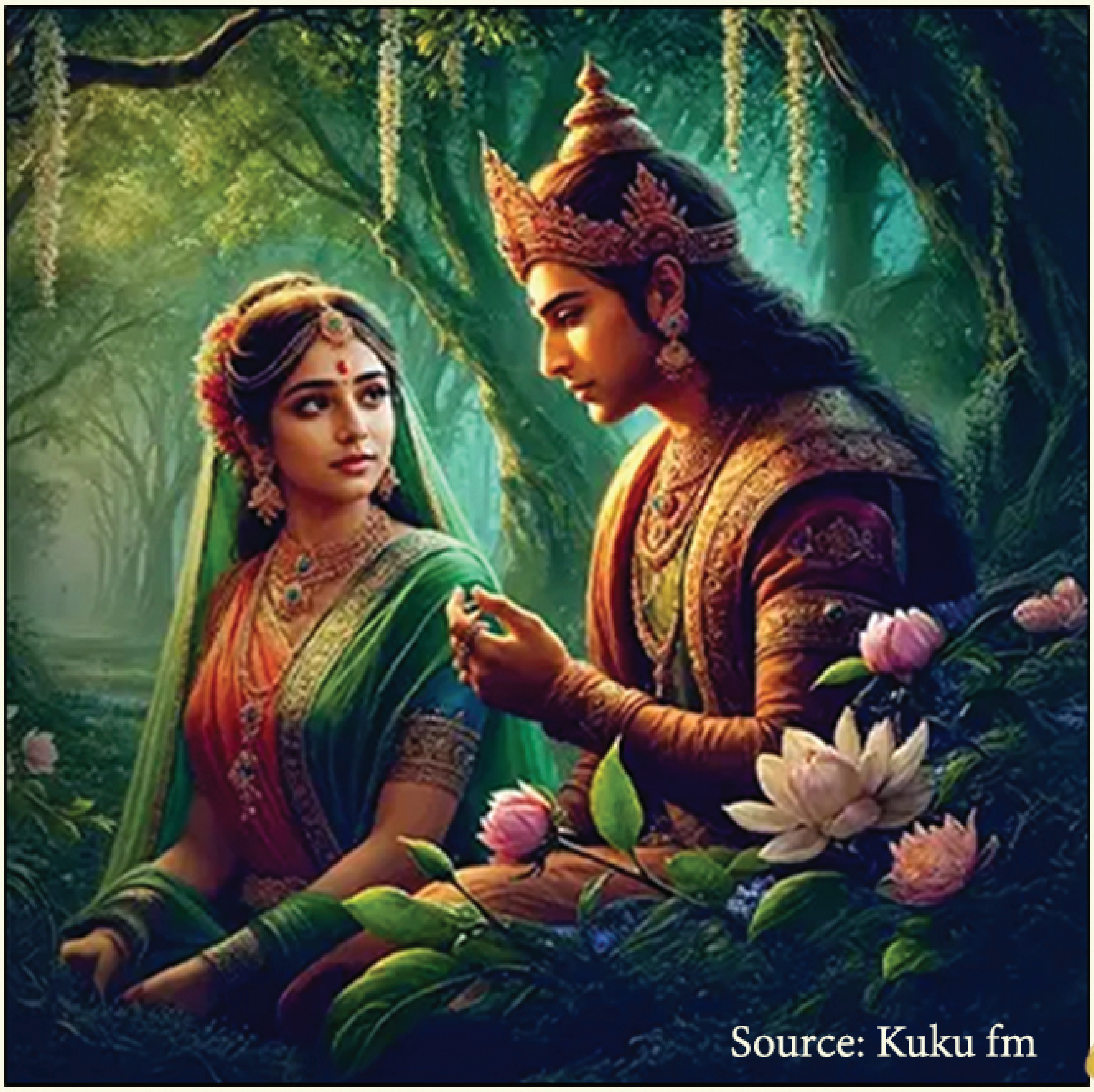
Source: Kuku fm

"प्रेम विवाह" कोई बुरा कार्य नहीं। हमारे देश "भारत" का नाम, जिस राजा भरत के नाम पर है; उन के माता-पिता (दुष्यंत और शकुंतला) का

भी प्रेम-विवाह था। परंतु, यह मान कर चलें कि विवाह में, प्रेम वाली तीव्र भावना नहीं रहेगी। विवाह का पवित्र संबंध तो विचार एवं विवेक बुद्धि से ही निभाया जाना है। विवेक बुद्धिः इतनी उत्तम तथा दुर्लभ है कि सतिगुरु अर्जन देव जी भी प्रभु से विनती कर के, उन से विवेक बुद्धि मांगते हैं: "**हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका**" (पन्ना 641)।

इस कारण, विवाह कोई खेल नहीं। विवाह सोच-समझ कर ही करवाएं, तथा अवश्य करवाएं; परंतु, निभाने की कला सीख कर करवाएं। विवाह-संबंधी गुरु ग्रंथ साहिब में बहुत सी पंक्तियाँ हैं। सतिगुरु नानक देव जी उच्चारण करते हैं: "**खेलु देखि मनि अनदु भइआ सहु वीआहण आइआ। गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु। हमरै घरि आइआ जगजीवनु भतारु**" (पन्ना 351)। इन पंक्तियों में सतिगुरु जी जहाँ विवाह की खुशी दर्शाते हैं, वहीं यह भी वचन करते हैं, "हे सहेलियो! विवेक एवं विचार वाले गीत

गाओ।" जो गीत हम विवाह में गाते हैं, ऐसे गीत गाने का गुरु जी ने वचन नहीं किया। विवेक एवं विचार का अर्थ है: सही व गलत का, अच्छे व बुरे का, तर्क/विचार सहित निर्णय करना। "विवेक बुद्धि" जिस के लिए सतिगुरु अर्जन देव जी लिखते हैं: "**बिबेक बुधि सभ जग महि निरमल, बिचरि बिचरि रसु पीजै**" (पन्ना 1325)। अर्थ: विवेक बुद्धि सर्वोत्तम है। विवेक बुद्धि का उपयोग कर के, विचारमग्न हो कर जीवन का आनंद माणियें। 'विवेक बुद्धि' कौन सी है? जो अच्छी तथा बुरी वस्तुओं की, अच्छे तथा बुरे कर्मों की, परख कर लेती है। उस विवेक बुद्धि की गुरु जी सराहना करते हैं कि सारे संसार में विवेक बुद्धि ही सर्वोत्तम है। इस कारण, आप भी विवेक बुद्धि धारण करें।

विवाह क्यों करवाना है?

इस लेख में जिन विषयों को मैं आप के ध्यान गोचर कर रहा हूँ, यह सभी विचारणीय हैं। विवाह कैसा संबंध है? विवाह करवाने से पहले किन बातों को समझने की आवश्यकता है? शादी के उपरांत सुखी जीवन कैसे जीना है?

हर अविवाहित लड़के-लड़की को चाहिए कि विवाह करवाने से पहले, वह स्वयं से पूछें एवं अपने आप में स्पष्ट हों कि हम विवाह क्यों करवाना चाहते हैं?

- क्या हम विवाह इस लिए करवा रहे हैं कि माता-पिता ने कहा है?

- क्या समाज ने कहा है, इस लिए विवाह करवा रहे हैं?
- क्या पड़ोसियों के विवाह हुए होने के कारण, हमें भी विवाह करवाना है?
- या, भेड़चाल में, देखा-देखी ही विवाह करवा रहे हैं?
- क्या काम-इच्छा पूरी करने के लिए विवाह करवाना है?
- क्या बच्चे पैदा कर के वंश बढ़ाने के लिए विवाह करवाना है?
- क्या पति-पत्नी ने जीवन भर का साथ निभाने एवं सहयोग देने या लेने के लिए विवाह करवाना है?
- क्या हमारे मन की कोई अन्य ऐसी इच्छाएँ हैं, जिन के कारण हम विवाह करवाना चाहते हैं?
- या, हमें पता ही नहीं कि हम विवाह क्यों करवा रहे हैं?

जिस प्रकार, कोई कोर्स या पढ़ाई करने से पहले हमें पता होता है कि यह करने उपरांत हम ने नौकरी या व्यापार कर के, पैसे कमाने हैं। इसी प्रकार, विवाह करवाने से पहले भी हमें यह पता होना चाहिए कि

हम विवाह क्यों करवा रहे हैं।

अपने माता-पिता से आदरपूर्वक विनम्रता से पूछें:

- माता-पिता जी, आप मेरा विवाह क्यों करना चाहते हैं? क्या कारण है?

- क्या आप को पोता, पोती, दोहता, दोहती चाहिए?
- या, आप कन्या-दान करना चाहते हैं?
- क्या आप के घर में मुझे खिलाने के लिए रोटी नहीं। इस लिए, बेटी होने के कारण मुझे पराये घर भेजना है?
- क्या समाज ने कहा है, इस लिए मेरा विवाह करना है?
- क्या पड़ोसियों के लड़के-लड़कियों के विवाह हो चुके हैं, इस लिए मेरा विवाह करना है?

• वह कारण क्या है, जिस के चलते आप मेरा विवाह करना चाहते हैं?

जब आप यह प्रश्न माता-पिता से पूछेंगे, तो अधिकांश माता-पिता के पास इस का उत्तर नहीं होगा। इन प्रश्नों का उत्तर तो आप को भी नहीं पता होता। यह सभी प्रश्न: माता-पिता से पूछ कर, उन के उत्तर लें। अपने आप से पूछ कर भी उत्तर लें। वह उत्तर, इन प्रश्नों के सामने लिखें। ज़ुबानी नहीं: प्रश्नों के उत्तर लिख कर बार-बार पढ़ें। फिर स्पष्ट हो कर, विवाह करवाने की ओर अग्रसर हों। विवाह करवा कर, सुख-पूर्वक जीवन जीने की कला सीखें, ता कि विवाह करवा कर हमारा घर नर्क न बने, हमारा घर स्वर्ग बने।

इसी लिए, सिख पंथ में विवाह को "आनंद कारज"

कहा जाता है। अर्थात: विवाह/आनंद सुख का साधन है। परंतु, जहाँ हर समय "तू-तू, मैं-मैं" लड़ाई झगड़े होते रहें; वहाँ आनंद हो कर 'स्वर्ग' नहीं बन सकता; वह तो 'नर्क' बन जाता है।

विवाह का अर्थ क्या है?

विवाह एक बंधन है। इस में आज जैसी आप की स्वतंत्रता नहीं रहेगी। परंतु, जीवन सुखी चलाने के लिए, कुछ स्वतंत्रता तो गँवानी ही पड़ती है; और कुछ बंधनों में बंधना भी पड़ता है। जैसे: यदि हम सीमित मात्रा में भोजन करने के बंधन में बंधें गे, तो ही आरोग्य रहें गे। यदि यह बंधन तोड़ देंगे, तो रोगी हो जाएं गे। पेट दर्द, दस्त, उल्टियां लग जाएं गी। इसी लिए, उत्तम बंधन में बंधना लाभदायक है। यह जीवन की एक अटल सच्चाई है। हर बंधन यदि सीमित मात्रा में हो, तो वह कोई बुरा नहीं है। क्योंकि, अच्छे बंधनों की मनुष्य को जीवन

भर आवश्यकता रहती है। कुछ बंधनों में प्रत्येक मनुष्य बंधा हुआ है। परंतु, उसे यह पता नहीं चलता कि वह इन बंधनों में बंधा हुआ है। विवाह एक बड़ा लाभकारी बंधन है। विवाह का भाव समझ कर ही विवाह करवाएं; नहीं तो न करवाएं।

विवाह-शादी का अर्थ है: दो व्यक्तियों ने अपना जीवन सुख-पूर्वक चलाने के लिए, एक-दूसरे के साथ लंबे समय तक, जीवन भर इकट्ठे रहना है। विवाह करवाने से पहले: विवाह को सफलता पूर्वक, खुशी-खुशी, जीवन भर इकट्ठे रह कर निभाने की कला सीखें, तभी विवाह करवाएं। नहीं तो विवाह करवा कर, कुछ दिनों में ही झगड़े-लड़ाई कर के; तलाको तलाकी, मुकद्दमे बाजी करने का कोई लाभ नहीं। पूरी उम्र कोर्ट-कचहरी में धक्के खाने; न रात को नींद, न दिन में चैन! न किसी कार्य में मन लगे। वकीलों तथा पुलिस को पैसे देने से तो; विवाह के बिना ही अच्छा है।

पुरुष के लिए प्रेम का अर्थ: अधिकतर शारीरिक क्रिया, संभोग होता है। परंतु, स्त्री के लिए प्रेम

का अर्थ: अधिकतर मानसिक होता है। पुरुष संभोग करने के लिए स्त्री से प्रेम करता है। जब कि स्त्री, पुरुष से प्रेम प्राप्त करने के लिए संभोग करती है। प्रकृति द्वारा दोनों के सोचने का तरीका ऐसा ही बनाया गया है, जिस कारण आपसी नाराज़गी होने की संभावना बढ़ जाती है। इसी कारण, जब युवक-युवती में नजदीकियाँ बढ़ती हैं, तो एकांत में पहली मुलाकात के समय ही लड़का काम-तृप्ति करने की इच्छा प्रगट करता है। यदि लड़की 'ना' कह दे, तो बहुत बार लड़का उसे त्याग देता है। इस कारण, न चाहते हुए भी, बहुत सी लड़कियां संबंध टूटने के डर से, लड़के को प्रसन्न करने हेतु; काम-तृप्ति के लिए 'हां' कह कर, उस की इच्छा पूरी कर देती हैं। प्रेम जताने वाले

वही लड़के काम-तृप्ति के उपरांत, अधिकतर उन लड़कियों को त्याग देते हैं।

एक बात अपने मन में सुनिश्चित कर लें: विवाह प्रेम करने के लिए नहीं, विवाह संभोग करने के लिए नहीं, विवाह बच्चे पैदा करने के लिए भी नहीं। भले ही, विवाह में प्रेम भी किया जाता है, संभोग भी किया जाता है तथा बच्चे भी पैदा किए जाते हैं। परंतु, विवाह का मुख्य उद्देश्य है कि दो व्यक्तियों ने जीवन भर इकट्ठे रह कर, एक-दूसरे का साथ निभाना है। सुख-दुख में एक-दूसरे को सहयोग देना है एवं लेना है। **विवाह; दो मनुष्यों में जीवन भर के लिए, बिना लिखित समझौते के, की गई एक भागीदारी है, जिसे अंग्रेज़ी में**

‘पार्टनरशिप’ कहते हैं। जिस में दो मनुष्यों ने इकट्ठे रह कर, अपना जीवन सुखी चलाना है। अग्नि के चारों ओर फेरे ले कर, अंतिम समय अग्नि में सस्कार होने तक; इकट्ठे रहना है। इस भागीदारी में उतराव-चढ़ाव भी आने हैं। संदेह व भ्रम होने ही हैं तथा कई बार संदेह के कारण मनमुटाव भी होने हैं। इसी लिए, भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी को "जीवन साथी" कहा गया है।

विवाह करवाने से पहले, सुखी जीवन जीने की कला सीखें।

विवाह करवाने से पहले, परिवार एवं लोगों के साथ बिना झगड़ा किए; एक साथ प्रसन्नता पूर्वक, प्रेम सहित, घुल-मिल कर रहने की विधि सीखें; नहीं तो तलाक की तैयारी पहले ही कर लें। फ़ेरे लेने से पहले ही वकीलों को बुला कर, तलाक के कागज़ तैयार कर लें। या, यह दृढ़ निश्चय कर लें कि विवाह के बाद तलाक नहीं होने देना। परंतु, विवाह करवा कर जीवन को नर्क भी नहीं बनाना; प्रेम पूर्वक घुल मिल कर, 'एक ज्योति दो मूर्ति' हो कर रहना है। विवाह करवाने से पहले, बिना झगड़ा किए, खुशी खुशी

अपने परिवार में तथा मित्रों के साथ इकट्ठे रहने की कला सीखें एवं उस का अभ्यास करें। एक-दूसरे की छोटी-छोटी बातों पर शोभा करने की विधि सीखें तथा हर अच्छे कार्य के लिए अपने साथियों की सराहना करने की आदत भी डालें। एक-दूसरे की छोटी-छोटी गलतियों को अनदेखा करने की विधि सीखें। अपने मन में यह दृढ़ निश्चय करें कि मुझे अपने जीवन साथी की बुरी आदतों को सहन करना है। क्योंकि, कुछ बुरी आदतें तो प्रत्येक मनुष्य में होती ही हैं। चाहे वह स्त्री हो, या पुरुष। कोई भी व्यक्ति संपूर्ण नहीं होता तथा हमें किसी की भी सभी आदतें अच्छी लग ही नहीं सकती; भले ही वह अच्छी भी हों।

कोई भी दो व्यक्तियों के सभी विचार, कभी भी आपस में नहीं मिलते। समय के साथ भी प्रत्येक मनुष्य के विचार एवं स्वभाव बदल जाते हैं। उन बदले हुए विचारों एवं स्वभावों के साथ भी, खुश रह कर, पूरा जीवन व्यतीत करना सीखें। सिर्फ सीखें ही नहीं, इसे अपनी प्रवृति में सम्मिलित कर के, अपना स्वभाव बना लें। किसी

गुण की विधि सीखना और उस गुण को अपने स्वभाव में शामिल कर के स्वभाव बनाना: दोनों पृथक-पृथक हैं। इस लिए, स्वभाव बनाने के लिए: उस गुण को लगातार उपयोग कर के, अभ्यास कर के ही; अपने स्वभाव में शामिल किया जा सकता है। जिस तरह आप ने चलना, बोलना, साइकिल, कार, फोन, कंप्यूटर आदि चलाने की विधि सीखी, फिर उस पर अभ्यास किया है; उसी प्रकार से, जो गुण आप ने धारण करना है, उस की आदत डालें, अभ्यास भी करें; तो ही उस गुण को उपयोग करने की आदत बनेगी।

विचार कीजिए! अब जब मुझे प्रेम का चश्मा लगा है तो मुझे ऐसा दिखता है जैसे, "मेरे जीवन साथी में कोई बुरी आदत है ही नहीं।" परंतु, बुरी आदतें आप के उस प्रियतम में भी हैं, और बुरी आदतें आप में भी तो हैं। जब प्रेम का चश्मा लगा हो, तब थोड़े समय के लिए सब कुछ हरा-हरा दिखता है। परंतु वास्तव में, वह हरा नहीं होता और हमें हमेशा हरा दिखाई भी नहीं देना होता।

इस लिए, विवाह करवाने से पहले, इन सभी बातों

की विधि सीखें: **"विचारों के मतभेद होते हुए, स्वभाव भिन्न-भिन्न होते हुए, एक दूसरे की बुरी आदतों को प्रत्यक्ष रूप में देख कर भी; हमें चिढ़ना भी नहीं,**

लड़ना भी नहीं: अपितु खुशी-खुशी इकट्ठे रहना है। मनमुटाव होने पर गुस्से में आ कर; हमें एक-दूसरे को कड़वा नहीं बोलना। स्त्री को स्वयं से निम्न, अपनी नौकरानी, अपने अधीन, या पाँव की जूती नहीं समझना। चाहे माता-पिता कहें, मित्र भी कहें कि पत्नी को निम्न समझो एवं नियंत्रण में रखो: तब भी ऐसा नहीं करना।" क्या आप यह सब कुछ कर सकें गे? सोचिए! अपने भीतर झाँकिए: जो मैं लिख रहा हूँ, यह कार्य बहुत कठिन है। विचार कीजिए! क्या पत्नी को नियंत्रण में

रखने वाला; मित्रों का एवं माता-पिता का वचन, उल्टा सको गे? हर समय उन का दबाव सहन कर सको गे? खुशी-खुशी संपूर्ण जीवन सुख-पूर्वक व्यतीत करने के लिए, एक-दूसरे पर हाथ भी नहीं उठाना तथा एक-दूसरे के माता-पिता को किसी भी कीमत पर बुरा नहीं कहना। एक-दूसरे का सहयोग करना है, साथ देना है एवं लेना है। यदि जीवन-साथी कोई गलत कार्य करे, तो उसे सुयोग्य ढंग से रोकना भी है। भले ही आप के पास अरबों रुपये हों, सभी सुख-सुविधाएं हों; परंतु, यदि आप के विचार नहीं मिलते, आदतें/स्वभाव नहीं मिलती एवं आप को आपस में मिल कर रहने की कला नहीं आती; तो आप लड़-झगड़ कर, चलते एयर कंडीशन में ही आग लगा दोगे। जहाँ विचार नहीं मिलते, वहाँ टकराव की संभावना बढ़ जाती है। जहाँ आदतें नहीं मिलतीं, वहाँ तो टकराव होना निश्चित ही है। ऐसी स्थिति में विवेक बुद्धि से आपस में सहमति बनाई जा सकती है। जिन की आदतें, स्वभाव, विचार आज मेल खाते हैं, कुछ वर्ष उपरांत वह भी बदल जाने हैं। जो चेहरे

युवा अवस्था में सुंदर दिखते हैं, कुछ वर्ष उपरांत वह सुंदरता भी नहीं रहनी।

जीवन की इन सच्चाइयों को स्वीकार कीजिए: **मेरे जीवन साथी के सभी विचार: मेरे साथ नहीं मिलें गे तथा स्वभाव एवं आदतें भी नहीं मिलें गी। परंतु, मेरे साथ जिस के विचार नहीं मिलते; मैंने अपने उस साथी के साथ भी खुश रहना है।** यह कला सीखो, इस ढंग का अभ्यास करो तथा खुश रहो। यह सोचो कि मुझे अपने जीवन साथी की बुरी आदतों को भी खुशी से स्वीकार करना है। उस की बुरी आदतों को प्रेम-पूर्वक और सुयोग्य ढंग से छुड़ाने की, सुधारने की कोशिश भी करनी है।

यदि मुझ से गलती हो जाए, या: मेरा जीवन साथी यह समझ ले कि मैंने गलती की है, या मुझ से गलती हुई है: तो मुझे अपने जीवन साथी से उस की क्षमा माँगनी है, तथा अपने जीवन साथी को उस की गलतियों के लिए क्षमा कर भी देना है। कई बार यदि गलती न भी हुई हो एवं गलती की भी न हो; तो भी हालात सुखमई रखने के लिए: मैंने गलती मान कर, क्षमा माँग लेनी है तथा

एक-दूसरे को क्षमा भी कर देना है। सतिगुरु नानक देव जी ने लिखा है:"**खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी**" (पन्ना 359) अर्थात: "क्षमा करने से ही प्रभु रूपी पति की प्राप्ति होती है। प्रभु पति, खुश हो कर अपने भक्त रूपी स्त्री को प्यार देता है।" यदि क्षमा करने से प्रभु प्राप्ति होती है, प्रभु अपने भक्त को प्रेम करता है; तो क्षमा करने से, आप का जीवन साथी, आप को प्रेम क्यों नही करेगा? आप का जीवन सुखी क्यों नही चलेगा? गुरु जी के इस वचन का यहाँ यह अर्थ लें कि "क्षमा करने से ही पति-पत्नी सुखी रह सकते हैं।" कई बार अपनी खुशी से अधिक, दूसरे की खुशी को प्राथमिकता देनी है (ध्यान रहे: 'कई बार' लिखा है, 'हमेशा के लिए' नहीं लिखा)। कभी अपनी खुशी को भी प्राथमिकता देनी है; कभी साथी की खुशी को प्राथमिकता देनी है। पति-पत्नी बनने वाला जोड़ा, इन सभी बातों का अपने भीतर विश्लेषण कर के; फिर ही विवाह करवाएं।

रोने दो, मन हल्का होने दो।

विवाह करवाने से पहले यह दृढ़ कर लें कि यदि आप के जीवन-साथी को रोना आए या वह रो कर अपना मन हल्का करना चाहे; तो, आप उसे बिना टोके, बिना डांटे रोने देंगे। विचार कीजिए: यदि आप का साथी रो कर अपना मन हल्का करना चाहे, तो क्या आप अपने साथी को; बिना किसी रोक-टोक के, बिना झिड़के, अपने सीने पर सिर रख कर, आधा घंटा रोने की आज्ञा देंगे? और, उस आधे घंटा रो कर उसे अपना मन हल्का करने देंगे? क्या उतना समय, आप उस से प्रेम भी करें गे? या, उसे डांट कर चुप करवा देंगे?

स्त्री, पुरुष दोनों को ही अपना जीवन सुखमय व्यतीत करने के लिए, इस बात की योग्यता पैदा करने की

आवश्यकता है कि हम अपने जीवन-साथी को, रो कर अपना मन हल्का करने का अवसर दें। यदि आवश्यकता पड़े, तो हमारा जीवन-साथी हमारे सीने पर सिर रख कर रो सके। हम उस रोते हुए साथी पर गुस्सा नहीं करें गे; उल्टा, उसे रो कर मन हल्का करने के लिए उत्साहित करें गे। यदि आप में अपने साथी का मन हल्का करवाने की योग्यता नहीं; तो यह योग्यता बनाने की आवश्यकता है। अपने साथी का मन हल्का करवाने की यह योग्यता, आप के जीवन को सुखमय बना सकती है। यह बात सिर्फ पति-पत्नी के लिए नहीं; आप का प्रेमी, प्रेमिका, मित्र या परिवार का कोई भी सदस्य, इस तरह से रो कर अपना मन हल्का कर सकता है।

यह समझने की आवश्यकता है: पुरुष आम तौर पर जल्दी रोते नहीं। अगर रोना आए, तो भी वह अपना रोना रोक लेते हैं। जब कि, स्त्रियाँ शीघ्र रोने लगती हैं तथा रो कर अपना मन हल्का कर लेती हैं। स्त्रियों के इस रोने को, उन की 'विशेषता' भी कहा जा सकता है, या

उनकी ‘कमज़ोरी’ भी कहा जा सकता है। यह तो अपने-अपने दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। परंतु, ऐसी स्थितियाँ प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आती ही हैं। अपनी भावनाएं व्यक्त करने के लिए, या मन हल्का करने के लिए; रोते पुरुष भी हैं। परंतु, वह स्त्रियों से कम रोते हैं। यदि स्त्री रोए, तो बहुत बार उस के रोने को ‘पाखंड’ कह दिया जाता है। या, पुरुषों द्वारा उसे डांट कर चुप करवा दिया जाता है, जो कि योग्य नहीं है। बहुत से पुरुष भी कभी अपने मित्र के पास बैठ कर रोते हैं, कोई अपने गुरु जी के पास बैठ कर रोते हैं, यहाँ तक कि भगवान या देवी-देवताओं की मूर्तियों के समक्ष बैठ कर भी रोते हैं। अपना दुख बता कर मन हल्का करते हैं। इस लिए, कभी-कभार रो कर मन हल्का कर लेना, कोई पाप नहीं। परंतु, हर समय रो कर मन हल्का करना भी योग्य नहीं, समय विचार लेना चाहिए। समाज इस रोने को स्वीकार नहीं करता।

विवाह एक समझौता है।

ध्यान से सोचें: क्या आप अपने जीवन साथी: (पति या पत्नी) द्वारा की गई आलोचना सुन कर, उसे सहन कर सको गे? उस आलोचना पर विचार कर सको गे? या, भड़क कर गले पड़ो गे "तू कौन है मुझे कहने वाला?" यदि आप के पास सहन-शक्ति नहीं है; तो इसे अपनाकर, इस का अभ्यास करें। क्योंकि, आप दोनों को एक-दूसरे से आलोचना सुननी ही पड़नी है। इस के साथ यह भी जरूरी है: बढ़िया सही ढंग से, मीठे शब्दों में, आलोचना करने की कला भी सीखें। गलत शब्दों में, चुभने वाली आलोचना नहीं करनी चाहिए। वास्तव में, आलोचना कर्त्ता का भाव तो यह होता है कि जिस की आलोचना कर रहे हैं: हम केवल उस को, उस की गलती बता रहे हैं; ता कि वह अपनी गलती सुधार ले। परंतु, अगर आलोचना ही इतनी चुभने वाली होगी कि श्रोता को सुननी कठिन हो जाए; तो वह अपनी गलती कैसे सुधार लेगा?

इस लिए, विवाह करवाने वाले युवाओं को यह स्वीकार कर लेना चाहिए: जीवन एक समझौता है, जिस में अपनी सभी बातें नहीं मनवाई जा सकती। इस लिए, एक-दूसरे के साथ समझौता करने की कला सीखें। सहमत होने की कला सीखें तथा सहमत होने की आदत भी बनाएं। कला सीखनी एवं आदत बनाना: यह पृथक-पृथक हैं। यह दृढ़ कर लें: पति-पत्नी आपसी सहमति से ही, सुखपूर्वक रहते हुए, अपना जीवन खुशी-खुशी व्यतीत कर सकते हैं।

विवाह संबंधी खर्चों पर पहले विचार करें।

विवाह से पहले अपने माता-पिता से बैठ कर सलाह करें: सगाई समय, शगुन समय, शादी समय कोई पार्टी करनी है, कि नहीं करनी? यदि करनी है, तो इस पर कितना खर्च करना है? जंज-घर (marriage palace) में जा कर कितना खर्च करना है, या नहीं करना? "**बंस को पूतु बीआहन चलिआ, सुइने मंडप छाए**" (पन्ना 477)। क्या वह लाखों रुपये, जो जंज-घर में खर्च करने हैं, उन पैसों से कुछ आभूषण बनवा लेने चाहिए, या नहीं?

कोई प्लॉट खरीद लेना चाहिए, या नहीं? कोई शेयर, ईटीएफ (ETF) खरीदने हैं, या नहीं? या, शराब पिला कर, जंझ-घर में नाच-गाने पर अपना पैसा उजाड़ देना है? इस बात पर अच्छे से विचार कर तय कर लें: कितना पैसा उजाड़ना है, एवं कितना निवेश करना है?

जीवन में सदैव एक जैसा समय नहीं रहता। जो लाखों रुपये, आप जंज-घर में शादी की पार्टी पर बर्बाद करते हैं; जंज-घर में बर्बाद किए उन पैसों ने, एवं आप की उस शोभा ने, आप को कठिन समय में सुख नहीं देना। हो सकता है कि कल को कोई ऐसी परिस्थिति बन जाए कि आप के घर में धन की तोट आ जाए, ऐसे में क्या करो गे? यदि वही लाखों रुपये आप ने बचा कर रखे होंगे, उस से सोना या शेयर खरीदे होंगे, तो जिस दिन आप पर कोई समस्या आएगी, उस दिन तक वह सोना या शेयर दोगुने-तिगुने हो सकते हैं। फिर उन्हीं पैसों का उपयोग कर के, आप अपना जीवन सुखी बना सको गे।

विवाह करवाने से पहले यह भी तय कर लें कि किसी प्रकार का दहेज लेना/देना है, कि नहीं?

लड़की के माता-पिता ने बहुत सारा दहेज बना कर रखा होता है, जो मना करने पर भी उन्होनें देना ही होता है। **"लख खरच विआहीऐ, गहने दाजु साजु अति भारी"** (भाई गुरदास जी)। परंतु, कई बार लड़के की भी दहेज लेने की इच्छा होती है। नहीं तो, आम तौर पर दहेज लेने की लड़के के माता-पिता की इच्छा अवश्य होती है। इन परिस्थितियों में, विवाह करवाने वाला लड़का, लड़की तय करें कि हमें क्या करना है?

नामधारी सतगुरु जगजीत सिंह जी ने दहेज कुप्रथा समाप्त करने हेतु ; दहेज लेने से रोकने के लिए, सिखों को बहुत प्रेरित किया। उन की प्रेरणा से, हजारों नामधारी लड़कों ने दहेज लेने से

इनकार किया तथा अपने घर आए दहेज को, स्वयं ससुराल में जा कर वापस किया। परंतु, यह भी सच्चाई है कि अधिकांश भारतीय समाज अभी तक इस कुप्रथा के कुष्ठ से मुक्त नहीं हो पाया है। दहेज का प्रबंध न हो पाने के कारण, हमारी बहुत सी बेटियों को

आत्महत्या करनी पड़ती है। दहेज के पैसे न होने के कारण, माता-पिता अपनी बेटियों की शादी करने से डरते हैं। हम सभी को मिल कर 'दहेज प्रथा' पूर्णतः समाप्त करनी चाहिए।

विवाह से पहले निर्णय लेने योग्य एक बहुत आवश्यक बात: दहेज से आया सामान: किस की संपत्ति होगी? पति की? ससुराल परिवार की? या, पत्नी की अपनी

संपत्ति? यह सामान पत्नी ने किसी को सौंपना है, या नहीं? या, अलग से अपने पास ही रखना है? लड़की को भी चाहिए कि विवाह करवाने से पहले ससुराल परिवार से यह स्पष्ट कर लें कि वह उसे नौकरी करने देंगे, या नहीं। बहुत से परिवार, विवाह से पहले तो यह कह देते हैं कि वह नौकरी करने देंगे, परंतु शादी के उपरांत करने नहीं देते। ससुराल परिवार का निर्णय सुन कर ही, लड़की को भी अपना निर्णय लेना चाहिए। यदि पति-पत्नी बनने वाले दोनों व्यक्ति, कमाने वाले हों; तो दोनों की कमाई एवं लड़की को दहेज में मिलने वाली सभी वस्तुएं: क्या इकट्ठी रखनी है, या पृथक-पृथक?

जब शादी होती है, तब पति-पत्नी में बहुत गलवकड़ी डलती हैं तथा प्यार होता है; उस समय पत्नी अपने पैसे पति के पास रख देती है। कुछ समय उपरांत, जब मनमुटाव व मतभेद होते हैं, तब पैसे पृथक रखने का मन करता है। फिर पति पैसा देता नहीं। इस लिए, विवाह करवाने से पहले यह भी तय करें: क्या बैंक खाते सांझा

रखने हैं, या पृथक-पृथक? खर्चे खुल कर करने हैं, या संकोच कर करने हैं? किन-किन कार्यों पर खर्चे करने हैं? हो सकता है कि आप का मन हो कि शादी के उपरांत हम ने घर खरीदना है, या फ्लैट लेना है, या कोई बहुत बढ़िया महंगी कार, या महंगा फोन खरीदना है। सोचिए! क्या हमें यह खर्च करने हैं, या नहीं? क्योंकि कार, मोटरसाइकिल, फोन आदि की कीमत दुकान से बाहर निकलते ही बहुत कम हो जाती है; दो साल में आधी रह जाती है। इस के मुकाबले, सोना, प्लॉट तथा घर की कीमत बढ़नी होती है। इस लिए, यह सब बातें भी विवाह करवाने से पहले तय करें।

विवाह के उपरांत पति-पत्नी ने किस कमरे में रहना है? आज के युग में बढ़ती जनसंख्या, बढ़ती महंगाई और हमारी गलत आदतों के कारण, खर्चे बहुत बढ़ गए हैं। मकान खरीदने कठिन हो गए हैं, किराए भी बहुत महंगे हो गए हैं। इस कारण, विवाह करवाने से पहले यह भी सोच लें कि क्या आप दोनों के लिए बाकी परिवार से पृथक सोने के लिए, कोई कमरा उपलब्ध है भी, या नहीं? क्या आप स्वतंत्र हो कर पृथक घर ले सकें गे, या नहीं? क्या आप के पास इतने पैसे हैं, या नहीं? या, आप एक बड़े कमरे में, जमीन पर ही सब के सामने, एक-दूसरे को गलवकड़ी डाल कर प्यार करें गे? भले ही, विवाह से पहले सभी बातें तय नहीं की जा सकती। परंतु, कई महत्वपूर्ण बातें जरूर तय की जा सकती हैं, जो विवाह के उपरांत होने वाले झगड़ों को कम कर के, एक सीमा तक, होने वाले तलाकों को रोक सकती हैं। मैं तलाक होने से रोकना चाहता हूँ। भारतीय सभ्यता में तलाक नहीं होते। तलाक से परिवार टूटते हैं एवं

तलाक लेने/देने वाले परिवार उज्जड़ जाते हैं। इस कारण, बार-बार कह रहा हूँ कि विवाह से पहले इन बातों पर विचार करें; ता कि तलाक की स्थिति ही न आए।

प्रेम विवाह

विवाह से पहले यदि आप का किसी के साथ संबंध बन जाए, तो उसे तुरंत विवाह के लिए "हाँ" न करें। उस संबंध को कुछ लंबा समय तक चलने दें। नए बने संबंध: कच्चे होने के कारण, बहुत बार जल्दी टूट जाते हैं। माता-पिता से पूछ कर ही, किसी को शादी का वचन दें। ऐसा न हो कि आप ने पहले ही शादी का वचन दिया हो तथा बाद में माता-पिता सहमत न हो। फिर, जब माता-पिता शादी करवाने से इंकार कर दें, तो आप आत्महत्या की धमकी देने लगें। वैसे भी, एक कच्चे रिश्ते में, पता नहीं होता कि संबंध कब टूट जाएगा! शादी का दिया हुआ वचन: बाद में बहुत महंगा पड़ सकता है, मुश्किलें खड़ी हो सकती हैं। इस लिए, शीघ्रता से उतावले हो कर शादी के वादे न करें, स्वयं को बचा कर रखें। "वादा किया तो निभाना पड़ेगा" यह गाना चाहे जितना भी गाया जाए, परंतु जब संबंध टूट जाता है, तो कोई वादा नहीं निभाया जाता। यदि आप का प्रेम विवाह

करने का विचार है; तो क्या आप के दोनों परिवारों के माता-पिता, आप से सहमत हैं? यदि माता-पिता सहमत नहीं हैं तथा विरोध में हैं, तो ऐसे हालात में आप का जीवन

कितना कठिन हो सकता है? विशेष रूप से, यदि आप की शादी अंतरजातीय है, तो क्या अंतरजातीय विवाह के लिए दोनों परिवारों के माता-पिता और अन्य संबंधी; आप के साथ सहमत होंगे या नहीं? यदि वह सहमत नहीं होंगे, तो फिर क्या हालात बनें गे? वह आप को कितना परेशान कर सकें गे? क्या आप उन के बिना जीवन व्यतीत कर सको गे? यदि वह आप का विरोध करें गे, तो क्या होगा? उन के विरोध कारण, आप का जीवन

कितना संघर्षपूर्ण एवं कठिन हो सकता है? विवाह से पहले, दोनों परिवारों की पृष्ठभूमि, दोनों के मायके परिवार के रीति-रिवाज और परंपराओं, उन के

उन के स्वभाव को जानना आवश्यक है। विशेष रूप से, किसी प्रकार की सुच मर्यादा, कठिन परंपराएँ, रीति-रिवाज आदि किसी परिवार में रखे जाते हैं या नहीं? कौन-सा परिवार, किस पंथ या धर्म में विश्वास रखता है, तथा वह किस गुरु जी को मानते हैं? पृथक-पृथक धर्मों से बनी दंपत्ति से जो बच्चे होंगे, उन्हें किस धर्म के विश्वास वाले, किस गुरु जी के सेवक बनाया जाएगा? मान लीजिए कि हिंदू और मुस्लिम की शादी हो जाती है,

तो वह अपने बच्चे को हिंदू बनाएं गे, या मुसलमान बनाएं गे? अंतर-पंथी विवाहों में अधिकतर ऐसी समस्याएं उत्पन्न होती ही हैं। इस के अलावा, पति या पत्नी में से किसी एक के: जो भी रीति रिवाज हैं, जो उसे संस्कार में मिले हैं; विवाह के उपरांत, क्या वह रीति रिवाज, वह विश्वास, वह पवित्रता वाली मर्यादा; निभाये जा सकें गे, या नहीं? इन बातों के कारण बहुत बार आपस में मतभेद एवं झगड़े हो सकते हैं, यहाँ तक कि तलाक का कारण बन सकते हैं। यह विषय अत्यंत गंभीर हैं। क्योंकि, कई परिवार ऐसे होते हैं, जहाँ मांस, शराब, तथा नशे का खुला सेवन किया जाता है; परंतु, कुछ परिवारों में इन चीजों को हाथ भी नहीं लगाया जाता। इन का उपयोग अत्यंत गलत माना जाता है। ऐसे अलग-अलग पृष्ठभूमि वाले संस्कारों से आए हुए लड़का-लड़की, जब विवाह करें गे; तो इकट्ठे रहते हुए, उन को अपने संस्कारों वाले स्वभाव या आदतें न मिलने के कारण, बहुत बड़ी समस्या आयेगी।

विवाह से पहले स्वभाव जानें।

अपने होने वाले जीवन साथी का स्वभाव, किसी भी ढंग से (मित्रों, संबंधियों, या सोशल मीडिया के माध्यम से) विवाह से पहले अच्छी तरह से जानने का प्रयास करें। यदि संभव हो, तो विवाह से पहले, अपने ससुराल पक्ष के लोगों के स्वभाव के बारे में भी जानकारी प्राप्त करें। विशेष रूप से, सास एवं ससुर के स्वभाव को जानें। क्योंकि, जैसे उन के स्वभाव होंगे, वैसे ही उन के लड़के या लड़की का भी स्वभाव होगा। एक पंजाबी कहावत है "माँ पर धी, पिता पर घोड़ा; बहुता नहीं, तो थोड़ा-थोड़ा।" अर्थात: बेटी का स्वभाव अक्सर अपनी माता के स्वभाव से मिलता-जुलता होता है, तथा बेटा आम तौर पर पिता के स्वभाव पर जाता है।

विवाह से पहले कुंवारे रहें।

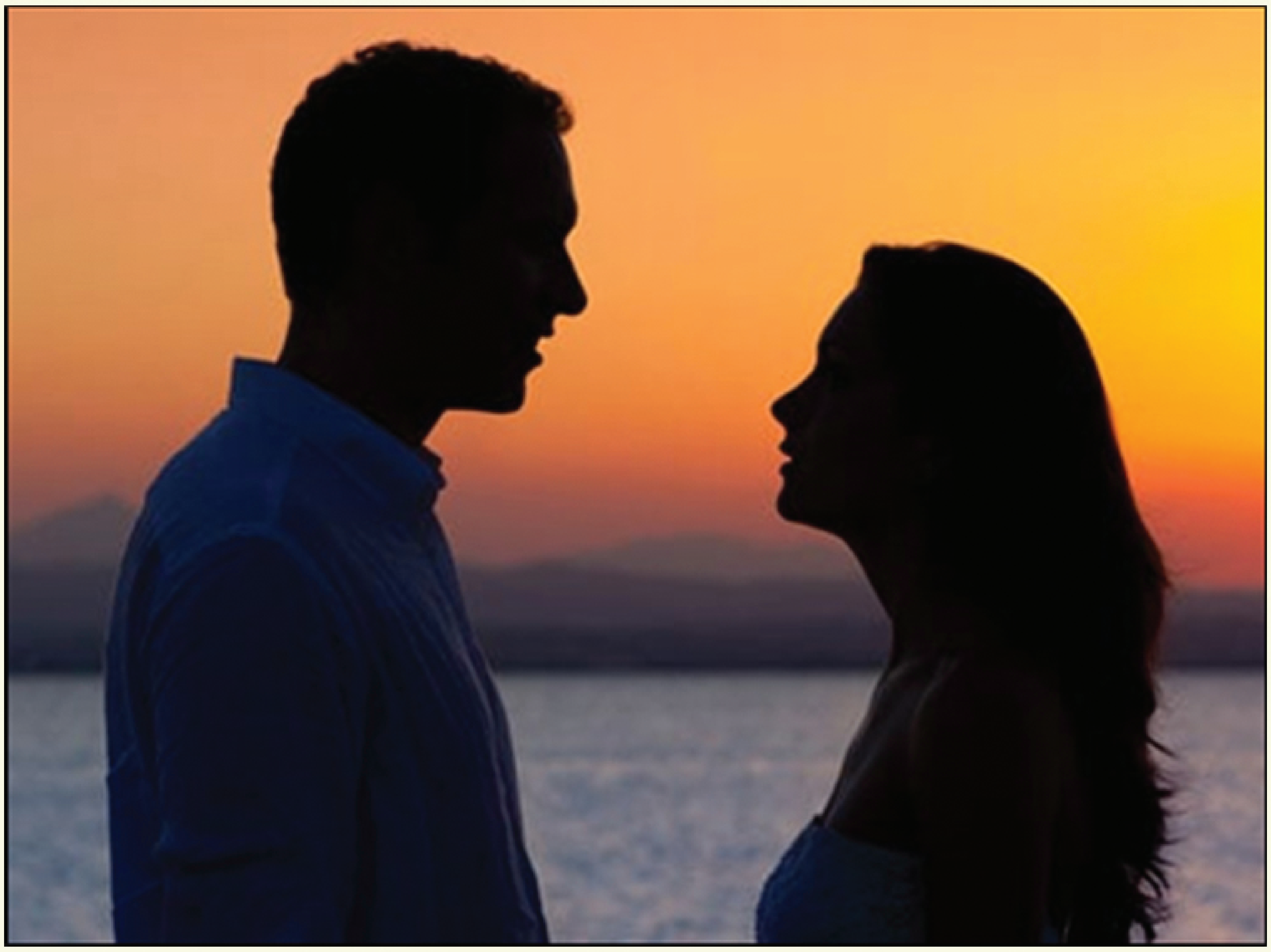

आजकल के समय में, कई लड़के लड़कियाँ विवाह से पहले ही; एक से अधिक लड़के लड़कियों के साथ प्रेम संबंध बनाते हैं, तथा कई तो शारीरिक संबंध भी बना लेते हैं। जो एक आदत बन जाती है। ऐसे लोगों को, जब विवाह के उपरांत एक ही जीवन साथी के साथ रहना पड़ता है, तो उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। क्योंकि,एक से अधिक लड़के-लड़कियों से प्रेम और संगति करने की आदत होने के कारण, केवल एक के साथ पूरा जीवन व्यतीत करना तथा उसी से प्रेम भी करना; उन्हें बहुत कठिन लगता है एवं कई लोग तो

विवाह के उपरांत एक ही साथी के साथ रह भी नहीं पाते। जिस कारण झगड़े हो कर, बात तलाक तक पहुँच जाती है। इस प्रकार के स्वभाव वाले बच्चों को आत्मविश्लेषण कर, अपने आप को परख कर ही, विवाह करवाना चाहिए। अपने आप से पूछें: क्या मैं अपनी इस आदत को छोड़ सकता हूँ? क्या मैं अपने एकमात्र जीवन साथी तक ही रह सकूँ गा/ सकूँ गी?

यदि आप ने किसी से पहले विवाह का वादा किया हुआ है एवं माता-पिता के दबाव में आ कर किसी और से किए विवाह को नहीं निभा सकते, तो बिना सोचे-समझे, सिर्फ माता-पिता की आज्ञा मान कर, विवाह न कर लें। फिर यह मत कहना कि "मेरे माता पिता ने जबरदस्ती, मेरी इच्छा के विरुद्ध यह विवाह कर दिया था। इस कारण मैं अत्यंत दुखी हूँ।"

एक प्रत्यक्ष प्रमाण है: एक लड़का लड़की आपस में प्रेम करते थे। उन्होंने विवाह करवाने के वादे भी किए थे। परंतु, लड़के के माता-पिता ने उस की मर्जी के विरुद्ध, उस का विवाह किसी और से करवा

दिया। लड़के ने जिस लड़की से, विवाह करवाने का वादा किया था; वह देखती ही रह गई। विवाह के कुछ समय उपरांत, वही लड़का फिर से अपनी प्रेमिका के पास आया तथा कहने लगा "मैं अपनी विवाह करके लाई हुई पत्नी को छोड़ देता हूँ, अब मैं तुम्हारे साथ विवाह कर लूंगा।" जब उस लड़की ने मुझ से पूछा, तो मैंने स्पष्ट रूप से कहा "अब उस से विवाह बिल्कुल मत करना। ऐसा कर के, आप दो परिवार उजाड़ दोगे। जो व्यक्ति पहले अपने माता-पिता को 'ना' नहीं कह सका, वह अब क्या कर लेगा?" कई बार ऐसे हालात बनते हैं। ऐसी गंभीर प्रस्थितियों में विचारवान बन कर, शांत रहते हुए, सँभलने की आवश्यकता है। मैं फिर उसी बात पर ही जोर दे रहा हूँ: विवाह से पहले प्रयत्न करो कि किसी के साथ शारीरिक संबंध न बनाएं। जब तक विवाह न हो, कुँवारे रहो। विवाह के उपरांत भी, अपने जीवन साथी के प्रति ही निष्ठावान रहें। इंटरनेट, मोबाइल, टी.वी. के इस युग में काम-इच्छा को इतना उत्साहित किया जाता है कि युवकों को शादी तक कुँवारे रहना असंभव जैसा है।

लड़के के कुछ आवश्यक कर्तव्य।

लड़के को विवाह से पहले यह पता होना चाहिए कि विवाह के उपरांत उस का कर्तव्य बन जाना है कि वह अपने परिवार के साथ, घर में आई हुई अपनी पत्नी का समन्वय (सहिचार) स्थापित करे और इस समन्वय को प्रेमपूर्वक बनाए भी रखे। उसे यह भी समझना चाहिए कि कई बार घर में आई हुई पत्नी के प्रति (जिसे माता और बहन ने भले ही कितने ही चाव से घर लाया हो) पत्नी की सास और ननद; दोनों ही ईर्ष्या कर सकती हैं। यह आवश्यक नहीं कि वह ईर्ष्या करें गी ही; परंतु, कर सकती हैं। इस

के कई कारण होते हैं। एक तो, जो समय लड़का पहले अपनी माता या बहन के साथ व्यतीत करता था, वह समय अब उन के हाथ से चला गया। लड़का, अब अपनी पत्नी के पास सोने लग गया, पत्नी के हाथ का खाना खाने लग गया, तथा घर की चौधर भी पत्नी के हाथ में जाने का एवं अपने हाथ से छिनने का; सास व ननद को अनजाने में ही दुख होता है। सास व ननद को यह अहसास ही नहीं होता कि वह कब ईर्ष्या की भावना से ग्रसित हो कर: चाव से घर लाई हुई उस बहू से ईर्ष्या करने लग गई हैं: "**ईरखा अरु उचाट, ए दोऊ जंग जोधा सूर**" (पातशाही १०)। ऐसे समय में, जब सास व ननद, नई आई बहु से ईर्ष्या करने लगती हैं; तो कई बार वह आपस में इकट्ठी भी हो जाती हैं तथा षड्यंत्र रच कर, पति-पत्नी के आपस में झगड़े भी करवा देती हैं। ऐसे षड्यंत्रों से बचने की आवश्यकता है। घर का वातावरण ठीक बनाए रखने के लिए बड़े सुंदर ढंग अपना कर; अपनी माता तथा बहन को उचित सम्मान

देते हुए, पारिवारिक संबंधों को मधुर बनाए रखने की आवश्यकता है। इस स्थिति में, लड़के को अपनी माता तथा बहन को प्रेम-पूर्वक समझाने की आवश्यकता है, साथ ही अपनी पत्नी का सही पक्ष भी लेने की आवश्यकता है। ऐसा नीतिवान पति के लिए ही कबीर जी ने लिखा है: "**हमरो भरता बड़ो बिबेकी**" (पन्ना 476) अर्थात: मेरा पति अत्यंत विचारवान एवं सूझवान है। पति को चाहिए कि वह अपनी माता एवं बहन से पूछ ले "आप मेरी पत्नी को घर में कितने अधिकार दोगे? उसे कितना टोका करो गे? उसे कितनी कड़वी-बातें सुनाओ गे?" अपनी माता एवं बहन से यह बातें स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है। क्योंकि, पिता से तो बहू को वास्ता कम ही पड़ता है। सास एवं ननद से ही वास्ता पड़ता है। आम तौर पर, उन दोनों ने घर में, बहू को उस के अधिकार नहीं देने होते। उन्हें अपने अधिकार छिन रहे प्रतीत होते हैं, जिस का उन्हें अचेत मन में ही बहुत डर रहता है। कई बार, उन का ताने मारने व टोका-टोकी

करने का स्वभाव बन चुका होता है: जिसे छोड़ना, उन के लिए कठिन होता है। वह टोका-टोकी और ताअने: बहू के लिए सहन करने बहुत कठिन हो जाते हैं। जिस से तंग आ कर पूरे परिवार में तनाव तथा कलह बढ़ जाता है। "**सबद सुरति सुनि समझि बोलै बिबेकी। नातुर अचेत पसु प्रेत हू मै एक है**" (भाई गुरदास जी)। अर्थात्: जो मनुष्य, सोच-समझ कर बोलता है, वह ही विवेकशील एवं ज्ञानी है। बिना विवेक के बोलने वाला मनुष्य: पशु, प्रेत के समान ही होता है।

कई बार पत्नी भी अपने पति को, केवल अपने तक सीमित रखने के लिए: चुगली कर के, झूठ बोल कर, या किसी और तरीके से; उसे अपनी माता या बहन से लड़वाने की कोशिश करती है। इस लिए,

ऐसे षड्यंत्र से भी बचने की आवश्यकता होती है। उस षड्यंत्र से बचने की भी विधि आनी चाहिए। क्यों कि, यह समय अति कठिन होता है। वास्तव में, लड़का यह सोच भी नहीं सकता कि उस की माता, बहन या पत्नी: कोई षड्यंत्र रच कर, या चुगली कर के; उसे किसी से लड़वा भी सकती हैं। लड़का उन पर संदेह भी नहीं कर सकता। उसे थोड़ा सतर्क रह कर अपनी माता, बहन एवं पत्नी: तीनों पर हल्का सा संदेह करने की आवश्यकता है तथा फिर रचे जा रहे षड्यंत्र को पहचान कर, नकारने की भी आवश्यकता है, ता कि आगे से कोई और षड्यंत्र न रचा जा सके।

परिवारिक षड्यंत्रों से सावधान कैसे रहें?

कई बार लड़की की माता भी अपनी बेटी को भड़का कर अपनी बेटी का, दामाद के घर में प्रभाव बनाना चाहती है। ऐसे षड्यंत्र से लड़की को स्वयं भी बचना चाहिए, तथा लड़के को भी सतर्क रहना चाहिए। कई बार, मित्र एवं पड़ोसी भी पति-पत्नी के झगड़े करवा कर, उस में हस्तक्षेप करना चाहते हैं, या लड़ते, उजड़ते परिवारों का तमाशा देखना चाहते हैं। ऐसे लोगों से भी सतर्क रहने की आवश्यकता है। इस लिए, हर व्यक्ति पर हल्का सा संदेह करने की आदत डालें। उन रचे जा रहे षड्यंत्रों को रोकते हुए, अपने सारे परिवार को प्रेम से समझाने की भी आवश्यकता है। विवाह से पहले लड़का-लड़की दोनों सोचें! यदि आवश्यकता पड़ी तो; क्या वह यह सब कर सकें गे? अर्थात: रचे जा रहे षड्यंत्रों से सतर्क रह कर, वह इकट्ठे रह सकें गे? आपस में लड़ें गे तो नहीं? विवाह करवाने से पहले, इन सब

बातों पर अच्छे से विचार कर लें। कई बार पत्नी को तंग करने के लिए, उस का

पति भी षड्यंत्र रचता है तथा अपनी माता या बहन के साथ, वह भी मिल सकता है। इस कारण, लड़की को भी यह मान कर चलना चाहिए कि "ससुराल परिवार मेरे साथ बुरा व्यवहार कर सकता है। ससुराल परिवार मुझे नौकरानी भी समझ सकता है एवं मुझे नौकरानी समझ कर, आवश्यकता से अधिक कार्य करवाने के लिए दबाव डाल सकता है।" जो सास एवं ननद, शादी से पहले घर का सारा कार्य करती थीं, वह शादी के उपरांत कहने लगती हैं, "अब बहू आ गई, हम क्यों काम करें?" लड़की को यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है: यदि ससुराल परिवार का कोई एक सदस्य, या कई सदस्य मिल कर

उस के साथ बुरा व्यवहार करें; तो उसे उन षड्यंत्रों से कैसे बचना है? उन के बुरे व्यवहार से अपना बचाव करते हुए, अपने पति के साथ सुख-शांति से कैसे रहना है? ससुराल परिवार द्वारा दिए जा रहे कष्टों को अपने माता-पिता को बताना है, या नही? यदि बताना है, तो कितना बताना है? कितने कष्ट चुप रह कर सहने हैं? अधिकतर लड़की के माता-पिता उसे यह शिक्षा देते हैं कि तुझे ससुराल की कोई बात नही करनी। इस के विपरीत, कई लड़कियां छोटी-छोटी बातें अपने माता-पिता को बताती रहती हैं। जिस कारण, वह अपने दामाद के घर में झगड़ा करते हैं। जिस से लड़की का वहाँ रहना कठिन हो जाता है।

यह ज़रूरी नहीं कि ससुराल परिवार बुरा व्यवहार ही करेगा; इस के विपरीत, ससुराल से बहुत प्यार भी मिल सकता है तथा कई बार मिलता भी है। परंतु फिर भी, थोड़े से संदेह की संभावना रखनी ही चाहिए।

बड़े संयुक्त परिवार में रहने के बहुत बड़े लाभ हैं। परंतु, कई बार बहुत समस्याएँ भी आ सकती हैं। क्योंकि, संयुक्त परिवार में जब बहुत सारे सदस्य एक साथ रहते हैं, तो विचारों और स्वभाव में मतभेद के कारण; आपसी मनमुटाव हो ही जाते हैं। पत्नी को चाहिए कि वह अपने ससुराल में सभी से प्रेम करे। अपने पति को परिवार से पृथक होने के लिए उत्साहित ना करे। अपितु, अपने पति को प्रेरित करके संयुक्त परिवार में रहने के लिए उत्साहित करे।

दामाद के कर्त्तव्य:

हमारे भारतीय समाज में दामाद को बेटी से भी अधिक मान-सम्मान ससुराल में मिलता है। परंतु, दामाद को ससुराल में अपने आप को 'विशेष मेहमान' समझने की बजाय, घर का 'पुत्र' मान कर ही रहना चाहिए। जितना सम्मान तथा प्रेम लड़का अपने माता-पिता व परिवार के अन्य सदस्यों को देता है, उतना ही सम्मान तथा प्रेम अपनी पत्नी के परिवार को भी देना चाहिए।

लड़के का अपने ससुराल परिवार प्रति सबसे आवश्यक कर्त्तव्य है कि वह अपने ससुराल वालों को भरोसा दिलाए कि वह उन की बेटी को खुश रखता है। यदि किसी कारण, लड़के का ससुराल-परिवार किसी समस्या से जूझ रहा हो; तो अपनी पत्नी को ताने-मेहने देने की बजाय, ससुराल परिवार की समस्या में, ‘दामाद’ की जगह ‘पुत्र’ बन कर, उन का हर प्रकार तन-मन से सहयोग करे।

विवाह से पहले लेने वाले निर्णय।

जब लड़के-लड़की का विवाह होता है, भले ही विवाह केवल दो व्यक्तियों का होता है; परंतु, पति-पत्नी बनने के उपरांत, दोनों पक्षों के माता-पिता तथा संबंधियों का मेल-मिलाप आरंभ हो जाता है, जो करना आवश्यक भी है। क्योंकि, समाज तो परिवारों के मेल-मिलाप से ही बनता है। विवाह से पहले विचार करें: क्या आप अपने जीवन साथी के संबंधियों के साथ मेल-मिलाप करना पसंद करें गे? या, उन से दूरी बनाए रखें गे एवं उन को ताअने देते रहें गे?

मुख्य रूप से, जब लड़की के माता-पिता या संबंधी: लड़की के ससुराल आते हैं, तो उन्हें नीचा समझा जाता है, या बोझ समझा जाता है; जो ससुराल वालों को नहीं समझना चाहिए। लड़के को अपने माता-पिता से विचार कर के, स्पष्ट रूप से तय करने की आवश्यकता है: क्या वह लड़की के माता-पिता को, घर आने पर पूरा सम्मान देंगे? क्या लड़का भी उन्हें माता-पिता जैसा ही सम्मान

देगा; भले ही वह गरीब परिवार से ही क्यों न हों? या, उन्हें "लड़की वाले" समझ कर, हमेशा नीचा ही समझा जाएगा?

पति के लिए आवश्यक है कि वह विवाह से पहले निर्णय ले: विवाह के उपरांत, क्या आप अपने माता-पिता के साथ रहें गे, या पृथक रहें गे? क्या आप की पत्नी इस बात से सहमत होगी कि आप को अपने माता-पिता के साथ रहना है? सास-ननद की नोक-झोक: सहन करनी है? क्या आप की पत्नी, आप के वृद्ध माता-पिता की सेवा करनी: पसंद करे गी? क्या आप दोनों जन: माता-पिता को अपने घर में रख कर, उन की सेवा संभाल करें गे? या, वृद्धाश्रम भेजें गे?

धोखे समय कैसे संभलना है?

आजकल, बहुत से पति-पत्नी दोनों ही घर से बाहर; व्यापार या नौकरी के लिए जाते हैं। बाहर जाने पर, कई बार उन का मन भटक कर, किसी पराई स्त्री या पराए पुरुष के के साथ संबंध बन सकता है "**जैसी पर पुरखा रत नारी**" (पन्ना 1164) अर्थ: जितना पराई स्त्री या पराए पुरुष के साथ प्रेम होता है, उतना अपने घर में नहीं होता। यदि कभी ऐसे हालात बन जाएँ, तो उन परिस्थितियों को कैसे संभालना है तथा फिर अपना दांपत्य जीवन सुख-पूर्वक कैसे चलाना है? जब आप का जीवन साथी आप को

किसी प्रकार का बड़ा धोखा दे, "**अस द्रोह नाम जोधा बडो, अति प्रभाव तिह जानीऐ**" (पातशाही १०) (द्रोह = धोखा)। या, यदि आप ऐसा समझ लें कि उस ने धोखा दिया है, भले ही उस ने न भी दिया हो: तब आप क्रोध में आ कर क्या करो गे? "**अंतरि क्रोधु अहंकारु है, अनदिनु जलै सदा दुखु पाइ**" (गुरु अमरदास जी)। जब भीतर अत्यंत क्रोध हो, तो दुख की ज्वाला अत्यंत बढ़ जाती है।

जब जीवन साथी के धोखे से आप के मन में गाँठ बन गई, तब क्या आप आत्मघात करो गे? या, अपने जीवन साथी से मार पिटाई करो गे, या.. ? या, तलाक का फैसला करो गे? या, फिर उस धोखे की घटना को अनदेखा कर के, शांत हो जाओ गे? "**सांती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ**" (गुरु अमरदास जी)। अर्थ: जो व्यक्ति शांत मन से कार्य करता है; प्रभु उस के कार्य सफल करता है। या, भीतर ही भीतर कड़वा घुँट पी कर, जीवन साथी के साथ प्रसन्न रहते हुए; जीवन भर साथ

निभाने का प्रयास करो गे? "**बिनु एक सांति सुन रे नृपति, सु अउर न दूसर बरजि है**" (पातशाही १०)। क्योंकि, जब 'क्रोध' नामक योद्धा आक्रमण करता है, तो उस के आगे केवल 'शांति' नामक योद्धा ही अड़ सकता है।

अत्यंत विशेष:-

जब आप के जीवन-साथी ने कोई अत्यंत आवश्यक, अत्यंत लाभकारी, बहुत ही छोटी-सी बात, आप के बहुत बार कहने पर भी न मानी: तब आप क्या करो गे? जिस छोटी-सी अत्यंत आवश्यक बात के न मानने से, आप को या आप के परिवार को बहुत बड़ी हानि पहुँच रही हो, आप के बहुत बार समझाने के बावजूद भी, आप का जीवन साथी उस छोटी-सी अत्यंत आवश्यक बात को न माने; तब आप क्या करो गे? मैं इसे विशेष रूप से इस लिए लिख रहा हूँ क्योंकि ऐसा बहुत कुछ पति-पत्नी के बीच होता है। उदाहरण: पति कहता है कि "बच्चों को

घर के छोटे-छोटे काम करने की आदत डालो"।
परंतु पत्नी, बच्चों को काम करने के लिए नहीं कहती। बच्चे निरर्थक (बेलोड़े)कार्यों में अपना समय व्यर्थ करते हैं। पत्नी बच्चों को कोई कार्य नहीं सिखाती, स्वयं ही सभी कार्य करती रहती है। जिस कारण, बच्चों को अपने हाथ से कोई कार्य करने की विधि नहीं आती, आदत भी नहीं बनती तथा कर्त्तव्य निभाने की भी प्रवृत्ति नहीं बनती। इस का बच्चों के स्वभाव, आचरण एवं भविष्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे हालात में आप क्या करें गे?

इसी तरह, यदि बच्चे हर समय कार्टून देखते रहें, वीडियो गेम खेलते रहें या चॉकलेट, टॉफियाँ एवं चिप्स खाते रहें। ऐसे गलत कार्यों से यदि माता-पिता में से कोई एक पालक रोकने का प्रयत्न करे, परंतु दूसरा पालक बच्चों को वही गलत आदतें अपनाने में सहायक हो, तब आप क्या करें गे? अर्थात: कोई भी ऐसे बुरे कार्य, जो बच्चों का जीवन नष्ट कर सकते हों। उन कार्यों को

यदि एक पालक रोकने का प्रयास करे, परंतु दूसरा पालक बच्चों को उसी बुरी आदत के लिए उत्साहित करे! ऐसे हालातों में आप क्या करें गे?

क्या आप ने कभी सोचा है: पति-पत्नी के बीच कुछ छोटी-मोटी तकरार होना जीवन का एक अंग है। परंतु यदि यह झगड़े बच्चों के सामने हों, तो इस का बच्चों के मानसिक एवं व्यक्तिगत विकास पर कितना गंभीर प्रभाव पड़ सकता है? पहले सोचिए! यदि हमारा झगड़ा हो, तो क्या करना है? क्या बच्चों से पृथक हो कर तकरार करनी है, या फिर बच्चों के सामने ही तकरार करने लग जाना है? बच्चों की अच्छी परवरिश करने के लिए और उन्हें अच्छा मनुष्य बनाने के लिए; माता-पिता को स्वयं भी "आदर्श मनुष्य" एवं "आदर्श माता-पिता" बनना होगा। क्या आप आदर्श बन सकें गे?

सहमत होने की कला सीखें।

दोनों साथी स्वयं से यह सवाल पूछें कि मेरा स्वभाव कितना गुस्सैल है? कितना चिड़चिड़ा है? इस गुस्सैले और चिड़चिड़े स्वभाव के कारण, वैवाहिक जीवन में क्या-क्या समस्याएँ आ सकती हैं? क्या आप का जीवन साथी आप के गुस्सैले या चिड़चिड़े स्वभाव को स्वीकार करे गा? विवाह से पहले, प्रेम में मीठी बातें करते हुए, एक-दूसरे के स्वभाव का सही मुल्यांकन नहीं किया जा सकता।

पारिवारिक जीवन में सहमति एवं सहयोग मुख्य होते हैं। पति-पत्नी दोनों को यह समझना चाहिए कि उन के व्यवहार का सीधा प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व तथा

भविष्य पर पड़ता है। इस लिए, हर प्रकार की गंभीर समस्याओं का मिल कर, बुद्धिमता से समाधान करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह सभी कार्य, वैवाहिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

बच्चे पैदा करने से पहले विचार करें।

विवाह करवाने से पहले, दोनों साथी आपस में यह भी तय कर लें कि हम ने बच्चे बनाने भी हैं, या नहीं? अपनी वंश को आगे बढ़ाने की प्रबल इच्छा तो प्रकृति द्वारा प्रत्येक जीव में होती ही है। इसी कारण, समाज का एवं माता-पिता का भी आप पर दबाव रहेगा कि बच्चे पैदा करो, और एक से अधिक पैदा करो। आप नई पीढ़ी के युवा हैं। हो सकता है कि आप का मन हो कि हम ने बच्चे नहीं पैदा करने, या कम बच्चे पैदा करने हैं। यह सोचें कि यदि आप बच्चे पैदा करना चाहते हैं, तो क्यों पैदा करना चाहते हैं? कितने बच्चे पैदा करने

चाहते हैं? वह बच्चे, जिन की आप ने दिन-रात कष्ट सहन कर के पढ़ाई करवानी है तथा जिन के लिए संपत्तियां बनानी हैं: उन से आप क्या आशा रखते हैं?

बच्चे बनाना या न बनाना: पति-पत्नी के हाथ में है। परमात्मा जबरदस्ती छत्त फाड़ कर, बच्चे आप की झोली में नहीं फेंक देता। बच्चों के कारण आने वाली कठिनाइयों के बारे में, पहले से ही सोच कर रखें। दक्षिण कोरिया, जापान आदि कई देशों में लोगों ने बच्चे पैदा करना बंद कर दिया है। वह कहते हैं, "हमारे पास बच्चों की परवरिश के लिए समय ही नहीं है। हम कमाई करें, या बच्चों की परवरिश करें? बच्चों की परवरिश में बहुत खर्च होता है। हमारे पास इतना पैसा नहीं है।"

यदि आप ने बच्चे बनाने ही हैं, तो बच्चे बनाने से पहले, क्या आप बच्चे बनाने की विधि सीखें गे? या, केवल काम क्रीडा करते ही बच्चे बना दोगे? यानी, गर्भधारण कैसे करना और करवाना है? गर्भधारण करने, करवाने से पहले; पति-पत्नी दोनों की सेहत कैसी होनी चाहिए?

गर्भावस्था के दौरान, माँ और बच्चे की देखभाल कैसे करनी चाहिए? बच्चे के जन्म उपरांत, उस की बढ़िया ढंग से कैसे परवरिश करनी चाहिए? यदि आप ने बच्चे बनाने ही हैं; तो क्या आप यह सब विधियाँ सीखें गे?

बहुत बार, बिना इच्छा के ही, केवल काम क्रीडा करते हुए, बच्चे बन जाते हैं। परंतु, बच्चों की परवरिश करनी अति कठिन है, अति खर्चीली है। इन सब बातों को ध्यान में रख कर ही, बच्चे बनाओ तथा उन्हें सफलता-पूर्वक पालो।

बच्चे बनाने से पहले, गर्भ धारण करने, करवाने से पहले: यदि आप की सेहत ठीक नहीं होगी, तो बच्चे की सेहत भी ठीक नहीं होगी। यदि गर्भावस्था के दौरान माँ की सेहत खराब होगी, तो बच्चे की सेहत पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा।

बच्चे के जन्म उपरांत:-

इस के साथ-साथ, विवाह करवाने से पहले, लड़के को यह भी पता होना चाहिए कि जब आप के घर बच्चे होंगे: बच्चे के जन्म से पहले एवं बच्चे के जन्म उपरांत, जब आप की पत्नी कार्य करने योग्य नहीं होगी, पैसे कमाने योग्य नहीं होगी; उस समय, क्या आप कमाई करने उपरांत, खाना भी बना कर अपनी पत्नी को खिला सको गे? उस गर्भावस्था में या सूतक अवस्था में, क्या आप अपनी पत्नी की अपने हाथों से देखभाल करना पसंद करो गे, या गंदगी (मैल) से नफ़रत करो गे? बच्चा पैदा होने के उपरांत, कम से कम एक वर्ष तक आप

आप की पत्नी कोई नौकरी करने योग्य नहीं होगी तथा कई महीने पहले भी कोई कार्य नहीं कर सकेगी; कम से कम, उतनी अवधि तक, आप को ही कमाई कर के घर का खर्चा चलाना पड़ेगा। क्या उस अवधि तक, आप अपनी पत्नी एवं बच्चे के खर्चे झेल सकें गे?

बच्चे के जन्म उपरांत, कई बार माँ और बच्चे को कोई रोग लग सकता है। क्योंकि, सूतक अवस्था में छोटे बच्चों को बहुत से रोग लगने की संभावना होती ही है। कई बार उस पर भारी खर्च भी हो जाता है; क्या आप उन खर्चों का प्रबंध भी कर सकें गे? बच्चे के जन्म उपरांत, मित्र और संबंधी घर आएंगे; उन के स्वागत, भोजन आदि पर भी खर्च बढ़ेगा तथा कष्ट/खेचल भी बढ़ेगा। क्या आप यह खर्चे कर सकें गे? या फिर, यह सारा भार लड़की के माता-पिता पर डाल देंगे? बच्चे के खर्चे, पत्नी के खर्चे, दवाइयों पर होने वाले खर्चे, वृद्ध माता-पिता की देखभाल के खर्चे एवं आवश्यकता अनुसार अन्य जो भी खर्चे होंगे, वह भी आप को ही वहन करने पड़ेंगे। क्या आप यह सभी खर्चे कर

सकें गे और करना पसंद भी करें गे; या, उन्हें बोझ समझें गे? बोझ समझ कर चिढ़ें गे और आपस में झगड़ा करें गे?

विवाह करवाने से पहले यह भी सोचें: यदि हम ने बच्चे बनाने ही हैं, जब हम ने परवरिश कर के, उन्हें बड़ा कर दिया, हो सकता है कि वह हमारे साथ न रहें, बुढ़ापे में हमारी सेवा भी न करें, हमें मिलने तक न आएं; जैसा कि आज कल इंग्लैंड, अमेरिका जैसे विकसित देशों में हो रहा है। बच्चे जब पढ़-लिख कर स्वतंत्र हो जाते हैं, तो वह लौट कर नहीं आते। भारत में भी इसी प्रकार की प्रवृत्ति आरंभ हो गई है। बड़े हो चुके बच्चों को जब आप कोई उलाहना देंगे "हम ने तुम्हें पाला, तुम पर इतना खर्च किया, तुम्हारी इतनी परवरिश की", तो उन्होंने कहना है "माता जी, पिता जी, क्या हम ने आप से कहा था कि हमें पैदा करो? या हम पर खर्च करो? आप ने यह सब अपनी मर्जी से किया है। अब यह हमारा जीवन है। हम जो चाहें गे, वही करें गे। हम आप के गुलाम नहीं हैं।"

इस लिए, पहले से ही यह मान कर चलें कि बड़े

हो कर बच्चे आप के पास नहीं रहें गे, आप की सेवा नहीं करें गे। यदि वह आप के पास रह गए तथा आप की सेवा कर ली, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे। परंतु, यदि आप ने पहले ही यह मान लिया होगा कि बच्चे बड़े हो कर आप के साथ नहीं रहें गे, तो आप को दुख कम होगा। क्योंकि, हमें अधिक दुख तभी होता है, जब कोई कार्य हमारी इच्छा के विरुद्ध होता है। जब हमारी इच्छा के अनुरूप कोई कार्य होता है, तो हमें अधिक सुख मिलता है। इस लिए, अपनी इच्छाओं एवं सोच को पहले से ही इस प्रकार बना कर रखें। काम क्रीडा करते ही हम बच्चों की कतारें लगा देते हैं। इस लिए, सोच-समझ कर बच्चे पैदा करें तथा विचारवान बन कर उन पर खर्च करें।

यदि आप बच्चों को अपने साथ रखना चाहते हैं, अपना पारिवारिक व्यवसाय संभालना चाहते हैं, अपनी संपत्तियाँ देना चाहते हैं; तो सब से पहले बच्चों को सही तरीके से पालने की कला सीखें तथा बच्चों को अच्छे संस्कार दें। हम बच्चों का सही पालन-पोषण

करना नहीं जानते। कोई आवश्यकता से अधिक लाड़-प्यार कर के, तो कोई मार-पीट कर ही; बच्चों को बिगाड़ देता है। ऐसे हालात में, क्या फिर भी आप संतान पैदा करना चाहते हैं? इस लिए, विवाह से पहले ही, गंभीरता से इस विषय पर विचार करें "**सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक**" (गुरु अर्जन देव जी)। अर्थात: तर्कशील, विचारवान मनुष्य को ही हर प्रकार का सुख मिल सकता है। जिस की विवेक बुद्धि है; वही वास्तव में धनवान है, वह ही सुखी है।

विवाह करवाने से पहले, बनने वाले पति-पत्नी आपस में बातचीत कर के यह भी स्पष्ट करें कि यदि हम बच्चे पैदा करना चाहते हैं, तो क्या उन बच्चों की परवरिश के लिए हमारे पास पर्याप्त आय होगी? क्या हम इतनी कमाई कर सकेंगे कि बच्चों की अच्छी तरह परवरिश करते हुए, अच्छी शिक्षा भी सुनिश्चित कर सकें? सब से महत्वपूर्ण बात: यदि आप बच्चों की अच्छी परवरिश और शिक्षा के लिए अच्छी कमाई कर सकते हैं, तो क्या आप अपने व्यवसाय या नौकरी से, अपने बच्चों

के लिए समय भी निकाल सकें गे? या, केवल पैसे के सहारे ही उन की परवरिश और शिक्षा करवा देंगे? विवाहित जोड़े को इस बात का ज्ञान होना चाहिए: जिन बच्चों को माता-पिता सुख-सुविधाएँ तो बहुत बना कर दे देते हैं एवं शिक्षा का भी अति उत्तम प्रबंध कर देते हैं; परंतु, स्वयं उन के लिए समय नहीं निकालते। उन बच्चों का माता-पिता से लगाव कम हो जाता है, वह बिगड़ भी सकते हैं तथा उनकी मानसिक प्रगति भी अच्छी नहीं होती। माता-पिता द्वारा बच्चों को समय न देने के कारण, कष्ट सह कर माता-पिता द्वारा की गई कमाई की सुख-सुविधा: मन-इच्छित लाभ नहीं देती। क्योंकि जो लाड़, प्यार, हंसी-मजाक, माता-पिता के साथ रहने से

मिलते हैं, जो शिक्षा व संस्कार माता-पिता ने देने होते हैं; वह कोई विद्यालय या होस्टल नहीं दे सकता। जब बच्चे माता-पिता के संस्कार एवं स्नेह से

विरक्त रह जाते हैं, तो उन्हें चाहे कितनी भी सुख सुविधाएँ मिलें, कितने भी बढ़िया महंगे स्कूल या होस्टल मिलें; फिर भी उन की मानसिक उन्नति वैसी नहीं होती, जैसी माता-पिता के प्यार से होती है। महंगे खिलौनों एवं सुविधाएं, माता-पिता के प्यार का विकल्प नहीं हो सकते; माता-पिता का प्यार तो केवल उन के साथ रहने से ही मिल सकता है।

बच्चों के लिए पैसे भी कमाना तथा उन्हें समय भी देना; आज के तेज़ युग में अति कठिन हो गया है।

अधिक दिखावा करने के चक्र में व पैसे कमाने की होड़ में, बहुत से माता-पिता बच्चों को समय ही नहीं दे पाते। क्योंकि, उनकी अपनी स्थिति ही ऐसी होती है कि कभी पत्नी काम पर होती है, तो कभी पति। बच्चों को 'डे-केयर' या नर्सरी स्कूल में भेज दिया जाता है, या उनके लिए नौकर रख लिए जाते हैं। पति-पत्नी का आपस में मेल-जोल भी कम ही होता है। ऐसी स्थिति में वह बच्चों को समय कहाँ से दें? आज के आधुनिक युग में जहाँ बहुत सारी सुख-सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वहीं पारिवारिक जीवन कहीं न कहीं बिखर गया है। पति-पत्नी के पास एक-दूसरे के लिए समय नहीं है, तथा बच्चों के लिए तो बिल्कुल भी समय नहीं है। अधिक पैसा कमा कर, बच्चों को अच्छे स्कूल एवं हॉस्टल तो भेज देते हैं; परंतु स्वयं समय नहीं दे पाते। कई माता-पिता तो व्यवसाय के बाद बड़ी पार्टियों, किटी पार्टियों या अपने मनोरंजन में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि उनके पास अपने बच्चों को देने के लिए समय ही नहीं बचता। माता-पिता से समय एवं स्नेह न मिलने

ऐसे बच्चे लोफ़र, आवारा हो जाते हैं तथा उन का माता-पिता से लगाव भी नहीं रह जाता।

इस कारण, विवाह करवाने से पहले, बच्चे पैदा करने से पहले; इन बातों पर अवश्य ध्यान दें। जिस तरह आप कोई व्यापार करने से पहले सोचते हैं कि इस से यह लाभ होगा, यह हानी होगी तथा यह समस्याएँ आएंगी। उसी तरह, बच्चे पैदा करने से पहले भी सोचें: बच्चे होने के उपरांत, हमें यह समस्याएँ आएंगी, यह हानियाँ होंगी तथा यह लाभ होंगे।

बहुत बार, दादा दादी, नाना नानी अपने पोते पोतियों तथा नाती-नातिनों के साथ खेल कर आनंद लेना चाहते हैं। बच्चों को अपने पास रखने के लिए एवं उन्हें खुश करने के लिए; वह, बच्चों को ऐसी खाने-पीने की चीजें देते हैं, जिन से बच्चों की आदतें

बिगड़ जाती हैं तथा उन की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसी स्थिति में, आप अपने बुज़ुर्गों द्वारा डाली जा रही बुरी आदतों से, अपने बच्चों को कैसे बचाएँ गे? क्योंकि, बुज़ुर्ग सम्मान योग्य हैं तथा बच्चों का भविष्य भी खराब हो रहा है। सोचिए!

विवाह करवाने से पहले यह भी तय करें: क्या हम अपने बच्चों को लाड़-प्यार से पालेंगे, रोकेंगे टोकेंगे नहीं? या, सख्ती से परवरिश करते हुए, उन्हें अच्छी जीवन शैली सिखाएं गे? क्योंकि, इस बात पर कई बार पति-पत्नी में झगड़े होते हैं। कुछ सख्ती किए बिना, अच्छी जीवनशैली नहीं सिखाई जा सकती। कई बार, माता का लाड़ अत्यधिक होता है, जब कि पिता सख्ती करता है। कई बार माता, अपने लाड़

प्यार से बच्चों पर इतना अधिकार जमाने लगती है कि पिता अपने बच्चों को प्यार भी नहीं कर सकता तथा उन्हें दंड भी नहीं दे सकता। इन बातों को विवाह करवाने से पहले ही ध्यान में रखें।

अविवाहित दंपत्ति या तलाकशुदा दंपत्ति के बच्चे को, जब अकेली माता या अकेले पिता को पालना पड़ता है; तो उस अकेले पालक को कमाई भी करनी होती है एवं बच्चे को भी संभालना पड़ता है। ऐसे समय, अनेक गंभीर समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। बच्चे की परवरिश सही तरीके से नहीं हो पाती। जो लाड़-प्यार, संस्कार, शिक्षा एवं संतुष्टि; बच्चे को माता-पिता दोनों से मिलने होते हैं, वह भी नहीं मिल पाते।

तलाक तक स्थिति पहुँचने का कारण क्या है?

विवाह से पहले, माता-पिता अपने बच्चों को शादी का सही अर्थ ही नहीं बताते कि विवाह कैसा संबंध है? कई अत्यंत शिक्षित, डिग्री-धारक (phd. आदि) मनुष्य भी, विवाह करवाने से पहले यह नहीं समझते कि विवाह केवल प्रेम नहीं, विवाह तो एक भागीदारी (partner-ship) है, जिस में जिम्मेदारियों का समान रूप से निर्वाह करना होता है। गरीब अमीर का विवाह, संस्कारों और स्वभाव के अंतर के कारण निभाना कठिन होता है। क्योंकि, अमीर ससुराल परिवार ने गरीब घर से लाई हुई लड़की को अपने से नीचा समझ कर ताअने-मेहणे देने ही होते हैं, जिन से मनमुटाव बढ़ते हैं।

तलाक तक स्थिति पहुँचने के अनेक कारण हैं: अहंकार, कड़वा बोलना, बिना कारण संदेह करना, अनावश्यक टोका-टोकी करना, अपना हुक्म चलाना, सहमत न होना, अयोग्य हठ करना, केवल अपने को

सही एवं दूसरे को गलत समझना, जीवन-साथी के अवगुणों को देखना एवं गिनाना, ताअने मारना, अपमानित करना, जीवनसाथी को सम्मान न देना, उस का स्वभाव न समझना, एक-दूसरे की आवश्यकताओं को न समझना एवं न ही पूरा करना, अपनी आवश्यकता को ही पहल देना आदि।

तलाक की कार्यवाही आरंभ करने से पहले विचार करें

विवाह करवाने से पहले यह सोचें कि जब आपसी मनमुटाव बढ़ कर, तलाक की ओर चलें गे, न्यायलयों के चक्कर लगाएं गे, मुकदमेबाजी होगी, तब सिर्फ़ आप की नींद ही नहीं उड़े गी। आप दोनों जीवनसाथियों के माता-पिता और संबंधियों की भी नींद उड़ जाएगी। दोनों परिवार उज्जड़ जाएं गे। तथा, पता नहीं फिर भी तलाक होना है, या नहीं। दूसरी अत्यंत आवश्यक समझने वाली बात यह है कि पति-पत्नी के झगड़े के समय, तलाक

के मुकद्दमेबाजी के समय; चालाक लोग, माता-पिता पर भी केस कर देते हैं। ता कि, दूसरे पक्ष को झुकाया जा सके और अपनी शर्तें मनवाई जा सकें। तलाक के मुकद्दमे कई वर्षों तक चलते रहते हैं। अनमोल समय (जिस का एक सेकंड गया भी वापस नहीं आता), वर्षों तक इन्हीं मुकद्दमों में ही बर्बाद हो जाता है। इन पर भारी खर्च भी हो जाता है। अंत में कुछ प्राप्ति होनी भी है, या नहीं; यह भी निश्चित नहीं होता। परंतु, दोनों परिवारों का जीवन अवश्य उज्जड़ जाता है। इस लिए, विवाह करवाने से पहले तथा तलाक की लड़ाई आरंभ करने से पहले; यह सोचें कि ऐसे हालात भी बन सकते हैं।

तलाक के समय बच्चों का बंटवारा करना अत्यंत कठिन हो जाता है। जब विवाहित दंपत्ति का तलाक हो जाता है; तो तलाक के उपरांत बच्चे दर-दर भटकते हैं। कई प्रकार की कठिनाइयों के कारण, उन की सही परवरिश भी नहीं हो पाती। तलाक से पहले, जब

माता-पिता आपस में झगड़ते हैं, तो उन झगड़ों का बच्चों के मन पर बहुत गहरा एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। माता-पिता के पृथक हो जाने से, छोटे बच्चों को ऐसा महसूस होता है, जैसे पृथ्वी ही उल्ट गई हो। मानसिक रूप से उन्हें बहुत बड़े आघात लगते हैं, जिस का बुरा प्रभाव पूरा जीवन ही नहीं जाता। इस प्रभाव को बच्चे अपने शब्दों में व्यक्त नहीं कर पाते।

अकेले माता या अकेले पिता के लिए, कमाई करते हुए, बच्चों के लिए समय निकालना अत्यंत कठिन होता है। विशेष रूप से पुरुषों को, बच्चों की देखभाल करने का अनुभव नहीं होता। ऐसी कठिन स्थिति में, अनेक जटिल समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस लिए, यदि आप ने बच्चे पैदा करने ही हैं, तो यह सुनिश्चित कर लें कि आप को जीवन-भर एक साथ रहना है। चाहे हालात कैसे भी हों, पृथक नहीं होना। आपसी मनमुटाव के चलते, यदि किसी कारणवश पृथक होना ही पड़े: तो पहले ही तय कर लें कि शांतिपूर्वक, पंचायत रूप से

आपसी समझौते के तहत पृथक हो जाना है? या फिर पुलिस, वकीलों द्वारा वर्षों तक मुकद्दमें लड़ते हुए, अपना तथा बच्चों का जीवन नष्ट करना है? क्या न्यायलयों के चक्कर काटते हुए, दुख झेलते हुए, अपना पूरा जीवन नष्ट कर देना है? या, विवेक से काम लेते हुए, आपसी समझौते के तहत पृथक हो कर, सुखी जीवन जीना है? अन्यथा, न्यायलयों में कितने पैसे उजाड़ने हैं? कितने वर्ष न्यायलयों के धक्के खाने हैं? संपत्ति का बंटवारा कैसे करना है? बच्चों का बंटवारा कैसे करना है? बच्चों को किस ने संभालना है? यह सारी बातें भी पहले ही तय कर लें। न चाहते हुए भी, कई बार जीवन में ऐसे हालात बन जाते हैं कि पृथक होना ही पड़ता है। इस लिए, न्यायलय में कार्यवाही आरंभ करने से पहले, उपरोक्त लिखी सभी बातें भी पहले से ही तय करने की आवश्यकता है।

यदि किसी कारण विवशता में पृथक होना ही है, या तलाक लेना है, तो कचहरी में जा कर तलाक लेने की बजाय; आपसी सहमति से बैठ कर लिखित समझौता

कर लें, या अपने संबंधियों, मित्रों एवं शुभचिंतकों को साथ ले कर, लिखित तलाक कर लें। यह तरीका अत्यंत

सरल एवं सस्ता है। इस से आप का जीवन सुखी हो सकता है। जो समय आप ने न्यायलयों के चक्कर काटने में लगाना था, वह भी बच जाएगा। न्यायलयों में, वकीलों पर खर्च होने वाले पैसे भी बचेंगे। आपस में बैठ कर सगे संबंधियों, मित्रों द्वारा बातचीत से एक ही दिन में जो कार्य निपट सकता है, वह आदलतों में कई वर्षों तक भी पूरा नहीं होता। इस लिए, तलाक के लिए न्यायलयों के चक्कर काटने की बजाय, परिवार एवं संबंधियों के बीच बैठ कर समाधान निकालने का प्रयत्न करें।

पति-पत्नी के संबंध को भारतीय संस्कृति में '**अर्धांगिनी**' और '**धर्मपत्नी**' जैसे श्रेष्ठ शब्दों में परिभाषित किया गया है, जो दोनों के लिए सम्मान, स्नेह और कर्त्तव्य पालन को दर्शाते हैं। भारतीय संस्कृति में इस संबंध को तोड़ने का कोई प्रावधान ही नहीं है। इसी कारण, भारतीय सभ्यता में 'तलाक' नाम का कोई शब्द है ही नहीं। 'तलाक' या 'डाइवोर्स' का कोई पर्यायवाची शब्द भी, भारतीय भाषाओं में नहीं है। यह शब्द तो विदेशों से आया है। अरब देशों से 'तलाक' शब्द आ गया, तथा तलाक से जुड़े जो रीति-रिवाज आज देखने को मिलते हैं, वह यूरप से आए हैं। इस लिए, सब से अच्छी बात तो यही होगी कि विवाह से पहले ही यह दृढ़ करें कि विवाह के उपरांत तलाक नहीं होना चाहिए। भारतीय संस्कृति के लोगों को ऐसी उत्तम जीवन शैली अपनानी चाहिए कि पति-पत्नी, प्रेमपूर्वक एवं प्रसन्न रहते हुए, आपस में इकट्ठे रह कर, संपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें। ऐसा सुखी जीवन जीने के लिए, पति-पत्नी दोनों को विचारवान बन कर, विवेक

बुद्धि धारण करने की आवश्यकता है। युवकों को ऐसी शिक्षा: माता-पिता द्वारा तथा महाविद्यालयों या विश्वविद्यालयों से अवश्य मिलनी चाहिए। जिस के लिए, गुरु जी ने वाणी में लिखा है "**ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि**" (पन्ना 1413)। अर्थात: जो लोग विवेक-बुद्धि का उपयोग करते हैं, वह सदा आनंद में रहते हैं। गुरु जी का आदेश मानते हुए जीवन को सुखमय बनाए रखने के लिए, विवेक-बुद्धि को धारण करना आवश्यक है, तथा विचारवान बनने की आवश्यकता है। यदि पति-पत्नी जीवन भर प्रेम-पूर्वक एवं प्रसन्न रह कर, जीवन व्यतीत कर सकें; तो वही **'वास्तविक शादी'** एवं **'वास्तविक विवाह'** कहलाएगा।

पुस्तक का सार

दुख की बात यह है कि विवाहित जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करने की कला, हमें कोई विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय नहीं सिखाता। यहां तक कि बहुत बार तो हमारे माता-पिता भी नहीं सिखाते। लड़कियों को तो माता-पिता थोड़ी-बहुत सीख अवश्य देते हैं; परंतु, लड़कों के बारे में उन की सोच कुछ ऐसी होती है "बेटा तो राजा है, पुत्र को तो शुभ शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं होती।" इस लिए, आप पढ़े-लिखे युवा, स्वयं इन बातों पर विचार कर के, अभ्यास कर के, कुछ इंटरनेट से पढ़ कर, दूसरों के अनुभव सुन कर, दूसरों के सुखी एवं दुखी दांपत्य जीवन को देख कर, उस का विश्लेषण कर के, फिर निष्कर्ष निकाल कर: सुखी जीवन जीने की कला सीखें। किसी के साथ एक ही कमरे में लंबा समय इकट्ठा रहते हुए, प्रसन्न एवं सुखी जीवन जीने का अभ्यास करें। सुखी जीवन जीने का अभ्यास करने से मेरा तात्पर्य यह नहीं कि लड़का, लड़की शादी से पहले ही वर्षों तक

आपस में साथ रह कर ('लिव-इन रिलेशनशिप' में) अभ्यास करें। अभ्यास करने का अर्थ है कि अपने मित्रों या परिवार के साथ, बिना झगड़ा किए, खुशी खुशी इकट्ठे रहने के अभ्यास हम कर सकते हैं। जिस से हमें यह विधि आ जाएगी कि अपने जीवनसाथी के साथ हमें किस प्रकार सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना है।

युवा पीढ़ी वाले एवं विवाह करवाने के इच्छुक युवक-युवतियां: मेरी इस पुस्तक को कई बार पढ़ें तथा बार-बार आत्म विश्लेषण करें। अपने आप को परखें। गुरु जी ने लिखा है "बिबेक बुधि सुखि रैणि विहाणी" (गुरु अमरदास जी)। अर्थात: तर्कशील सोच एवं विवेक-बुद्धि के साथ ही, जीवन रूपी रात को सुखपूर्वक बिताया जा सकता है। विवाह करवाने से पहले सोचें: क्या मैं अपने जीवनसाथी के साथ खुश रहने वाले सभी कार्य, जीवन-भर कर सकता/सकती हूं?

सज्जनों! विवाह करवा कर जीवन को स्वर्ग बनाना है, तलाक के मुकद्दमे लड़ते हुए नर्क नहीं बनाना।

"अबिबेक अउर बिबेक को: न बिबेक बैठ विचार हैं" (पातशाही १०)

यदि पाठकों को यह पुस्तक अच्छी लगे; तो पाठक समझ लें कि यह पुस्तक मेरे गुरु जी ने लिखवाई है, मैंने नहीं लिखी।

ठाकुर दलीप सिंघ

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥
एक जोति दुइ मूरती; धन पिरु कहीऐ सोइ ॥

(सतिगुरु अमरदास जी)

हँसता-खेलता सुखी परिवार बनें!

Email: info@namdhari-sikhs.com

Website: www.namdhari-sikhs.com

Contact: +91 9650066108, +91 9023150008